

## नया नियम इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

### सत्र 24: रोमियों, भाग II

टेड हिल्डेब्रांट [गॉर्डन कॉलेज]

#### परिचय [00:00-

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट का न्यू टेस्टामेंट पर शिक्षण है। यह सत्र संख्या 24 है। रोमियों का दूसरा भाग। पिछली बार हम रोमियों की पुस्तक को प्रस्तुत कर रहे थे और हम अध्याय एक, दो और तीन को दिखा रहे थे कि मानवजाति पापी थी। अन्यजाति पापी थे, और हमने दिखाया कि यहूदी पापी थे। फिर अध्याय तीन, मूल रूप से सभी पापी भेजे गए हैं और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। फिर मानवजाति के पाप से निपटने के बाद, परमेश्वर हमें वहाँ नहीं छोड़ता। मूल रूप से हम मोक्ष की ओर बढ़े। मोक्ष मोक्षविज्ञान का अध्ययन है। तो पिछली बार हमने इन विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की, दूसरे शब्दों में, जब यीशु हमारे पापों के लिए मरा, तो उसने वास्तव में क्या किया? और जो होता है वह वास्तव में बहुआयामी होता है। तो जब मसीह हमारे पापों के लिए मरता है, तो हम औचित्य की इन बातों से गुज़रते हैं, परमेश्वर के सामने धर्मी बनाया जाना, छुटकारे को वापस खरीदा जाना, प्रायश्चित्त जिसे हमारी शर्म ने ढक लिया है, प्रायश्चित्त कि परमेश्वर हमारे पाप पर क्रोधित है और उसके क्रोध को शांत करने की आवश्यकता है। इसलिए उसे शांत करने की ज़रूरत है, उसके क्रोध को शांत करने की ज़रूरत है, शांति की ज़रूरत है, प्रायश्चित्त की ज़रूरत है। शुद्ध होने के लिए धोने की ज़रूरत है। सुलह, हम परमेश्वर के दुश्मन हैं और अब फिर से परमेश्वर के साथ सुलह कर रहे हैं। फिर अंत में, गोद लेना कि अब हम परमेश्वर के बच्चे कहलाते हैं। हम परमेश्वर को अपना पिता कहकर संबोधित करते हैं। यह एक अद्भुत, एक अद्भुत बात है। यह पिता/बच्चे की काल्पनिक रिश्तेदारी शब्दावली है जो परमेश्वर हमें देता है और यह सुंदर है। तो ये सभी अलग-अलग तरीके हैं जिनसे यीशु हमें बचाता है, इसलिए बोलने के लिए। तो उद्धार एक, एक बहुआयामी अवधारणा के रूप में है।

आज, मैं कुछ ऐसी चीजों पर आगे बढ़ना चाहता हूँ जो वाकई बहुत पेचीदा हैं। वैसे, इन चीजों से असहमत होना ठीक है। यहाँ तक कि हमारे अपने संकाय में भी, हम इनमें से कुछ चीजों पर असहमत हैं। मैं चीजों पर अलग-अलग दृष्टिकोणों से गुज़रने जा रहा हूँ, फिर मैं आपको बताऊँगा कि मैं क्या सोचता हूँ और निश्चित रूप से यही सही उत्तर है (मज़ाक)। तो हम आज इनमें से कुछ चीजों पर चर्चा करेंगे जो बहुत कठिन हैं। तो कानून पर पॉल का दृष्टिकोण।-- आप यहाँ से शुरू करके थोड़ा नीचे जाना चाहते हैं। पुराने दृष्टिकोण के अनुसार कानून के बारे में पॉल का दृष्टिकोण यह था कि रोमियों की पुस्तक में और पॉल के साथ, कानून और अनुग्रह के बीच एक तनाव था, कानून और अनुग्रह के बीच यह तनाव है। यहूदियों को पाखंडी के रूप में देखा जाता था क्योंकि वे कानून का उपयोग अपनी धार्मिकता स्थापित करने के लिए करते थे। ईसाई धर्म अब ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग है। तो यहूदी धर्म और ईसाई धर्म के बीच यह संघर्ष है इसलिए यहूदी धर्म वास्तव में ईसाई धर्म के लिए एक बाधा है। कानून और अनुग्रह में तनाव, कानून और विश्वास में तनाव कि शरीर और आत्मा और यहूदी शरीर में अधिक रुचि रखते थे जो खतना बनाम व्यक्तिगत उद्धार के साथ है। फिर फोकस लंबे समय तक व्यक्तिगत उद्धार पर था। यदि आप अपने मुँह से कबूल करते हैं, तो आप यीशु के बारे में अपने दिल में विश्वास करते हैं कि आप बच जाएंगे। इसलिए हमने इसे बहुत व्यक्तिगत रूप से लिया। यह रोमियों के पुराने दृष्टिकोण, पॉल के पुराने दृष्टिकोण की तरह है।

जो हुआ है वह यह है कि एक नया दृष्टिकोण सामने आया है। यह नया दृष्टिकोण जेम्स डन और ईपी सैंडर्स नामक व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किया गया है। मूल रूप से वे जो कह रहे हैं, नहीं, कानून और सुसमाचार के बीच ऐसा कोई तनाव नहीं है। बल्कि यह समावेश और बहिष्कार है कि यहूदी लोग, कि इन चीजों में खतना और कानून है, वे विशेष जातीय चिह्न थे। वे यहूदियों के लिए जातीय चिह्न थे। जो हो रहा है वह यह है कि पॉल खतना, कानून, कोषेर खाने के उन जातीय चिह्नों को पार करने का प्रयास कर रहा है। वह उन चीजों को पीछे छोड़ने का प्रयास कर रहा है। ईसाई धर्म यहूदी धर्म और इन जातीय चिह्नों से परे है। तो अब ईसाई धर्म अधिक सार्वभौमिक हो सकता है। ईसाई धर्म अधिक सार्वभौमिक और समावेशी हो सकता है, जबकि यहूदी यहूदी धर्म अनन्य था। आपको उनके समूह में शामिल होने के लिए उनके काम करने पड़ते थे। अब समूह फैल रहा है। तो यह यहूदी/गैर-यहूदी

और एक चर्च के रूप में एक साथ आने के बारे में अधिक बात कर रहा है जो व्यक्तिगत उद्धार की तुलना में कई मायनों में रोमनों का मुद्दा है। तो यह एक बड़ा बदलाव है। मुझे नहीं पता कि मैं इस पर क्या सोचता हूँ। मुझे खुद पाप के बारे में बात करने का पुराना तरीका पसंद है क्योंकि पाप सिखाया जाता है और व्यक्तिगत उद्धार, व्यक्तिगत भागीदारी। पाप और उद्धार व्यक्तिगत रूप से केंद्रित हैं। इसलिए मुझे यह पसंद है। लेकिन मुझे यह नई चीजें भी पसंद हैं जो मुझे लगता है कि वह एक अच्छी बात कह रहा है कि यह पॉल का यहूदियों और अन्यजातियों के साथ काम करना और उन्हें एक चर्च में एक साथ लाने की कोशिश है।

ऐसा लगता है कि रोमियों 7:12 में उनकी कुछ शिक्षाओं के पीछे यही बात है। मूल रूप से पॉल कानून के बारे में अपना दृष्टिकोण देते हैं। वे कहते हैं, "कानून पवित्र, धार्मिक और अच्छा है।" इसलिए पॉल हमें स्पष्ट रूप से बताते हैं। पॉल कानून की आलोचना नहीं कर रहे हैं और यह नहीं कह रहे हैं कि कानून खत्म हो गया है। अब मसीह में हमारे पास अनुग्रह है। हमें अब कानून की कोई आवश्यकता नहीं है। और इसे खारिज कर रहे हैं। पॉल कहते हैं, नहीं, "कानून पवित्र, धार्मिक और अच्छा है।" इसलिए यह एक बहुत ही दिलचस्प बात है जो उन्होंने वहां कही। पॉल कहते हैं कि कानून का मतलब था कि "मनुष्य कानून का पालन किए बिना विश्वास से धर्मी ठहराया जाता है, उस धार्मिकता के माध्यम से जो यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर से आती है। कोई अंतर नहीं है क्योंकि सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" कोई अंतर नहीं था। यहूदी या गैर-यहूदी सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। यह उस आयत का संदर्भ है। इसलिए हमारे पास यहाँ जो है वह है "इसलिए कोई भी व्यक्ति कानून का पालन करके उसकी दृष्टि में धर्मी घोषित नहीं किया जाएगा, बल्कि कानून के माध्यम से, हम पाप के प्रति सचेत हो जाते हैं।" तो हम पिछली बार पाप के बारे में बात कर रहे थे और कैसे हम अपनी संस्कृति में पाप से बच निकलते हैं। पाप वास्तव में लुप्त हो चुका है। लोग अब पाप के बारे में बात करना पसंद नहीं करते। इस पर कभी ज़्यादा चर्चा नहीं होती। लेकिन हमने कहा कि यीशु मसीह दुनिया के पाप को दूर करने के लिए परमेश्वर के मेमने के रूप में आए थे। इसलिए यदि आप पाप को दूर करते हैं, तो आप उद्धार की पूरी ज़रूरत और मसीह के कार्य को दूर कर रहे हैं। यह एक बहुत बड़ी बात है।

और यही वह है जो लोग आज करने की कोशिश कर रहे हैं। मुझे लगता है कि कई मायनों में, कानून का उद्देश्य हमें उजागर करना था। कानून के माध्यम से, हम पाप के प्रति सचेत हो जाते हैं। इसलिए कानून के माध्यम से, हम पाप के प्रति सचेत हो जाते हैं और यही इसका कार्य है। इसलिए कानून का कार्य हमारे विवेक को उजागर करना और उसे तेज करना है, हमारी चेतना को जीवंत बनाना है ताकि हम जागरूक हो सकें कि हम पाप कर रहे हैं। लेकिन फिर से, हमारी संस्कृति में हमें क्या बताया जाता है? मैं ठीक हूँ, तुम ठीक हो, हम ठीक हैं। हम वास्तव में पापी नहीं हैं। तुम एक अच्छे इंसान हो। मैं एक अच्छा इंसान हूँ। हम सभी अच्छे लोग हैं और इस तरह की बातें। पॉल कह रहा है, "नहीं, व्यवस्था का उद्देश्य हमें पाप के तथ्य से अवगत कराना था और यह कि हम पापी हैं। और इसलिए यह एक बड़ी बात है। और फिर, यह वास्तव में उस सांस्कृतिक परंपरा के विपरीत है जिसे हमने आज अनुभव किया है।

यहूदियों ने कानून को उल्टा कर दिया। इसलिए यहूदियों ने कानून को अपनाया और अपने पाप को उजागर करने की बजाय, यहूदियों ने कानून का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए किया कि वे कितने धार्मिक थे। इसलिए उन्होंने कानून के उस कार्य को नष्ट कर दिया जो कि पाप को उजागर करना था ताकि उन्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता हो। लेकिन इसके बजाय उन्होंने कानून को यह दिखाने के लिए अपनाया कि वे कितने अच्छे थे। मैं चर्चों में गया हूँ, आप भी चर्चों में गए होंगे जहाँ चर्चों में लोग, आप इसे उनके तरीके से करते हैं और फिर आप सही तरीके से करते हैं। यदि आप इसे उनके तरीके से नहीं करते हैं, तो आप गलत तरीके से करते हैं। वे मूल रूप से अपनी छोटी कानूनी प्रणाली का उपयोग यह दिखाने के लिए करते हैं कि आप स्वीकृत हैं या नहीं और वहाँ बहुत सख्त हैं। मुझे पता है कि मैं उस तरह के माहौल में बड़ा हुआ हूँ। पॉल जो कह रहा है वह यह है, "नहीं, कानून का उद्देश्य हमें पाप की चेतना दिखाना है।" इसका उद्देश्य हमें हमारी धार्मिकता दिखाना नहीं है। इसका उद्देश्य हमें हमारे पाप दिखाना और पाप को उजागर करना है। वह हमारे पिता अब्राहम का उपयोग करता है। डॉ. विल्सन की पुस्तक "हमारा पिता। अब्राहम" रोमनों की पुस्तक के बहुत से भाग पर आधारित है। यहाँ पॉल कहते हैं कि खतना होने से पहले अब्राहम को धर्मी ठहराया गया था। इसलिए खतना होने से पहले अब्राहम को खतने के इस जातीय चिह्न के साथ

पहचाना गया, खतने से पहले और कानून से पहले, क्योंकि अब्राहम के पास कानून नहीं था। कानून 500 साल बाद मूसा के माध्यम से आया। तो आपके पास जो है वह कानून से पहले और खतने से पहले है, यह कहता है कि "अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता के रूप में गिना गया।" तो यह एक बड़ी बात है-- विश्वास। तब अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता के रूप में गिना गया, इससे पहले कि वह एक यहूदी के रूप में खतना किया गया और उसके पास कानून था। अब्राहम केवल विश्वास से धर्मी ठहराया गया था। यही तरीका है कि अब हम अब्राहम के तरीके से परमेश्वर के पास आते हैं। अब्राहम विश्वास से चला गया और वह खतना होने से पहले और उसके पास कानून होने से पहले विश्वास से धर्मी ठहराया गया। हम भी ऐसा ही करते हैं। और इसलिए अब्राहम में, यहूदियों और गैर-यहूदियों को एक समान पिता मिलता है, ऐसा कहा जा सकता है।

वह वास्तव में अब्राहम से भी पहले की बात करता है। वह इसे आदम तक सार्वभौमिक बनाने के लिए वापस जाता है। वह कहता है कि हम सभी मर चुके हैं। आदम के पाप में पूरी मानव जाति आदम में मर गई। अगर हम सभी आदम में मर चुके हैं, तो हम सभी मसीह में जीवित हो गए हैं। और इसलिए आदम के बीच यह वाकई दिलचस्प तुलना है, जिसने पूरी मानवता को मौत दी और मसीह जो अब सभी को जीवन देता है। तो यह एक तुलना है। आदम मौत लाया। मसीह जीवन लाता है। इसलिए वह विशेष रूप से अध्याय पाँच में उस पर वापस जाता है। पाप की सार्वभौमिकता में कानून औचित्य का साधन नहीं है। हम कानून का पालन करके और इन सभी चीजों का पालन करके भगवान के सामने धर्मी घोषित नहीं किए जाते हैं। बल्कि यह कहना कानून का दुरुपयोग है कि कानून हमें दिखाता है कि हम कितने अच्छे हैं। कानून का उद्देश्य हमारे पाप और हमारे जीवन की पापपूर्णता को उजागर करना है। तो यह कानून के बारे में पॉल के दृष्टिकोण का हिस्सा है। आगे मैं पवित्रता की इस धारणा पर चर्चा करना चाहता हूँ जिसे पॉल ने यहाँ विकसित किया है, विशेष रूप से रोमियों के अध्याय सात में। यह किस बारे में है? पवित्रीकरण, अब मैं पवित्रीकरण पर आता हूँ। हमने औचित्य के बारे में बात की। औचित्य का अर्थ है कि परमेश्वर हमें धार्मिकता प्रदान करता है, धार्मिकता प्रदान करता है। पवित्रीकरण वास्तव में हमारा पवित्रीकरण है। पवित्रीकरण का अर्थ

है किसी चीज़ को पवित्र बनाना। तो यहाँ मूल रूप से यह है कि व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में पवित्र कैसे बनते हैं? हमें परिपूर्ण होने के लिए कहा गया है, जैसे कि हमारे स्वर्गीय पिता परिपूर्ण हैं। क्या किसी को लैव्यव्यवस्था में यह अंश याद है, "पवित्र बनो, जैसा कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ।" तो हमें नए नियम में भी आज्ञा दी गई है कि "पवित्र बनो, जैसा कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र है।" पवित्रीकरण का संबंध पवित्रता की इस प्रक्रिया से है। क्या आप में से कुछ लोग वेस्लेयन चर्च से हैं? वेस्लेयन चर्च, वेस्ले और चर्चों के लिए जाने जाते हैं, उन्हें पवित्रता आंदोलन का हिस्सा कहा जाता है। तो यह एक तरह से बड़ी बात है।

अब, रोमियों 7 में पॉल संघर्ष करता है। उसने पाप के साथ काम किया है और अब यीशु मसीह के माध्यम से उद्धार प्राप्त किया है। सातवें अध्याय में, पॉल वास्तव में अपने स्वयं के पवित्रीकरण के साथ संघर्ष करता है। हमें इसे इस संदर्भ में देखना होगा कि यह क्या है। रोमियों 7:15 में पॉल क्या कहता है। वह यह कहता है, "क्योंकि जो मैं करना चाहता हूँ, वह नहीं करता, परन्तु जो मुझे अप्रिय लगता है, वही करता हूँ।" लेकिन वैसे भी, हम फंस गए हैं। पॉल यह टिप्पणी करता है और वह अपने जीवन के साथ संघर्ष करता है। वह कहता है, "जो मैं करना चाहता हूँ, वह नहीं करता, परन्तु जो मुझे अप्रिय लगता है, वही करता हूँ।" अगर मैं वह करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता, तो मैं सहमत हूँ कि कानून अच्छा है। वहाँ पॉल कहता है, मैं अच्छा करना चाहता हूँ, लेकिन वह कहता है, जब मैं अच्छा करना चाहता हूँ, तो मैं वह कर देता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता। "इसलिए मैं इस कानून को काम करते हुए पाता हूँ।" पॉल कहते हैं, "इसलिए जब मैं अच्छा करना चाहता हूँ, तो बुराई मेरे साथ होती है। क्योंकि मेरे भीतरी अस्तित्व में, मैं परमेश्वर के नियम से प्रसन्न होता हूँ। लेकिन मैं अपने शरीर के अंगों में एक और नियम को काम करते हुए देखता हूँ जो मेरे मन के नियम के विरुद्ध युद्ध करता है, और मुझे अपने अंगों में काम करने वाले पाप के नियम का कैदी बनाता है। मैं कितना अभागा व्यक्ति हूँ जो मुझे इस मृत्यु के शरीर से छुड़ाएगा।" तो यहाँ पॉल के पवित्रीकरण के बारे में सवाल उठता है। क्या एक मसीही के लिए पूर्ण बनना संभव है? हम कहेंगे, नहीं, क्योंकि हम इस तथ्य से सहज हैं कि हम पापी थे। हमें अब इसकी उतनी परवाह नहीं है। लेकिन शास्त्र कहता है, "स्वर्ग में अपने पिता के समान पूर्ण बनो।" इसका क्या अर्थ है, "पवित्र बनो

जैसा कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ। इसलिए पॉल इस पर संघर्ष करता है और वह कहता है, "जो काम मैं नहीं करना चाहता, मैं वही करता हूँ जो मैं करता हूँ।"

रोमियों 7 में इस अंश के लिए मूल रूप से चार दृष्टिकोण हैं। यह अलग-अलग चर्चों में अलग-अलग है। वे इस पर अलग-अलग दृष्टिकोण अपनाएँगे और पवित्रीकरण का क्या अर्थ है। मैं मसीह जैसा कैसे बनूँ? पवित्रीकरण यह है कि मैं कैसे पवित्र बनूँ? मैं यीशु जैसा कैसे बनूँ? कुछ लोग कहेंगे कि रोमियों 7 में पॉल ने ईसाई बनने से पहले की बात की है। इसलिए पॉल कहते हैं, ईसाई बनने से पहले, मैं इन चीज़ों से जूझता था। इसलिए जो चीज़ें मैं नहीं करना चाहता था, मैं उन्हें करने लगा क्योंकि पॉल उस समय ईसाई नहीं था। तो इस तरह से पूरी समस्या से बचा जाता है और कहा जाता है कि यह मसीह को जानने से पहले की बात है। वह वर्णन कर रहा है कि पवित्र आत्मा की शक्ति के बिना, अपने जीवन में छुटकारे की शक्ति के बिना और परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप और उन सभी चीज़ों के बिना उसकी आत्मा कैसी थी। ईसाई बनने से पहले यह उसका संघर्ष था। कुछ लोग दूसरा दृष्टिकोण रखते हैं कि यह एक युवा विश्वासी का संघर्ष है। यह एक युवा विश्वासी का संघर्ष है। जब कोई व्यक्ति मसीह में नया होता है, तो वे संघर्ष करते हैं क्योंकि वे अपने जीवन में पाप के इस सारे बोझ के साथ आते हैं। वे तब तक इसके साथ संघर्ष करते हैं जब तक कि वे मसीह को नहीं जान लेते। इसलिए यह वृद्धि, विकास होता है और वे संघर्ष करते हैं और वे परिपक्वता में बढ़ते हैं। जैसे-जैसे वे परिपक्वता में बढ़ते हैं, पाप के साथ संघर्ष कम होता जाता है। तीसरा दृष्टिकोण यह है कि कुछ लोग सुझाव देते हैं कि यह पॉल अपने शरीर में अपने संघर्ष का वर्णन कर रहा है, आत्मा में नहीं, आत्मा में नहीं, बल्कि अपने शरीर में। तो यह पॉल एक शारीरिक व्यक्ति के रूप में बात कर रहा है जो शरीर में अपने संघर्ष और आत्मा में संघर्ष के बारे में बता रहा है। तो फिर से, तीन पदों पर लोगों ने विभिन्न समय पर कब्जा कर लिया है।

मैं इस पर एक बहुत ही सरल स्थिति रखता हूँ। मुझे लगता है कि आप में से बहुत से लोग जो इस कमरे में हैं, शायद उसी तरह से सोचेंगे जैसा मैं सोचता हूँ। यह एक परिपक्व ईसाई के रूप में पॉल का संघर्ष है, कि पॉल एक परिपक्व ईसाई है। वह एक अपरिपक्व ईसाई है। कभी-कभी उन्हें अपने

पाप के बारे में भी पता नहीं होता है। यह कोई ऐसा व्यक्ति है जो प्रभु में युवा है, कभी-कभी अपने पाप के बारे में भी नहीं जानता है, लेकिन जैसे-जैसे कोई व्यक्ति प्रभु में अधिक परिपक्व होता जाता है, उसे अपने पाप के बारे में अधिक से अधिक पता चलता है। इसलिए मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि हम वॉचमैन ली नाम के एक व्यक्ति को उद्धृत करेंगे। यह नॉर्मल क्रिश्चियन लाइफ है जिसे पॉल कह रहा है कि उसका वर्तमान संघर्ष है। वह चीजें जो मैं नहीं करना चाहता और मैं कर रहा हूँ और वे चीजें जो मैं करना चाहता हूँ। मैं नहीं करता।" पॉल सामान्य ईसाई जीवन का वर्णन कर रहा है। पवित्रता में संघर्ष जो हमारे पास है। हाँ, भगवान ने हमें धार्मिकता प्रदान की है, लेकिन वे अभी भी जीवन जीने में हैं। संघर्ष है। अभी भगवान को जानना, जैसे-जैसे आप एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाते हैं, यह महत्वपूर्ण है, आप कक्षा से दूसरी कक्षा में जाते हुए भगवान की उपस्थिति का अनुभव कैसे करते हैं? यह एक संघर्ष है। आप कहेंगे, ठीक है, मुझे भगवान के साथ चलने की ज़रूरत है। मुझे हर पल मसीह के साथ चलने की ज़रूरत है। लेकिन फिर आप भौतिकी की कक्षा में जाते हैं और आप कहते हैं, हे भगवान, आप जानते हैं, यह कैसे संबंधित है? फिर अचानक आप उस चीज़ में चले जाते हैं। खैर, यह संबंधित है। क्या आप भौतिकी करते समय भगवान की उपस्थिति का अनुभव कर सकते हैं? क्या आप लेन डाइनिंग हॉल में बर्तन धोते हुए किसी व्यक्ति का अनुभव कर सकते हैं? क्या आप भगवान की महिमा के लिए बर्तन धो सकते हैं? फिर से, मैं भाई लॉरेंस की उस पुस्तक पर वापस आता हूँ जिसका नाम है, प्रैक्टिसिंग द प्रेजेंस ऑफ़ गॉड। वह एक भिक्षु था जो बर्तन धोता था, लेकिन उसने फैसला किया कि वह बर्तन धोएगा भगवान की महिमा के लिए व्यंजन बनाना। और यह भगवान की उपस्थिति का अभ्यास करना है।

तो मैं यहाँ जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि रोमियों 7 में एक परिपक्व मसीही के रूप में पॉल का संघर्ष है। वह हमें बता रहा है कि जब कोई व्यक्ति मसीही बनता है, तो वास्तव में संघर्ष तीव्र हो जाता है। क्योंकि इससे पहले हम अपने अपराधों और पाप में मरे हुए थे। इसलिए हमने पाप के विरुद्ध संघर्ष नहीं किया क्योंकि हम अपने अपराधों और पाप में मरे हुए थे। पाप ठीक था। लेकिन जब हम जीवित हो जाते हैं, तो हम पुनर्जीवित हो जाते हैं। हम मसीह के लिए जीवित हो गए हैं। अब अचानक हमारे पास वे सभी संघर्ष हैं जो हमारे पास पहले नहीं थे। इसलिए कभी-कभी यह मुझे



परेशान करता है, आप लोगों को उपदेश देते और कहते हुए सुनते हैं, आप मसीह का अनुसरण करते हैं और मसीह आपको ये सभी अद्भुत चीजें देंगे और आपके जीवन में कोई और संघर्ष नहीं होगा। मैं आपको जो सुझाव दे रहा हूँ वह बाइबल है, और यह जो कहता है, नहीं, नहीं, और ऐसा होगा कि वास्तव में कुछ संघर्ष वास्तव में तीव्र होंगे। आप मसीह के जितना करीब होंगे, संघर्ष उतना ही तीव्र होगा। वैसे, क्या यीशु मसीह ने खुद संघर्ष किया था, "पिता, यह प्याला मुझसे ले लो।" तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि संघर्ष ईसाई जीवन का हिस्सा है। मुझे लगता है कि रोमियों 7 में पॉल ने जो प्रकट किया है, मुझे लगता है कि आपके जीवन में ऐसे समय होंगे जब आप अलग-अलग चीजों से संघर्ष करेंगे। जीवन के विभिन्न चरणों से गुजरते हुए प्रत्येक चरण में, संघर्ष बदल जाते हैं, फिर भी कुछ अर्थों में, हालाँकि आपके पास जो संघर्ष हैं वे जारी रहेंगे। मैंने हमेशा उन चीजों के बारे में सोचा है जिनसे मैंने संघर्ष किया है, जो मैंने सोचा था कि जब मैं एक युवा व्यक्ति था, मैंने इसे पकड़ लिया और फिर अचानक मुझे एहसास हुआ कि मैं 10 साल बाद उसी चीज से संघर्ष कर रहा हूँ जिससे मैं 10 साल पहले संघर्ष कर रहा था। लेकिन यह एक अलग मुखौटा पहने हुए है। तो यह एक तरह से अलग है फिर अचानक मैं मुखौटा उतारता हूँ और मैं देखता हूँ कि नहीं, यह वास्तव में वही चीज है जिसके साथ मैं 10 साल पहले काम कर रहा था। तो ऐसा होता है कि जैसे-जैसे आप जीवन में आगे बढ़ते हैं, आप देखेंगे कि ये चीज़ें सामने आती हैं और वे जीवन के विभिन्न चरणों में अलग-अलग तरीकों से अलग-अलग मुखौटों के साथ सामने आती हैं। ऐसा लगता है कि यह अलग है, लेकिन वास्तव में यह एक ही मूल बात है। इसलिए मेरा सुझाव है कि जितनी जल्दी हो सके आप उन मूल मुद्दों पर ध्यान दें। आपके अस्तित्व में कौन सी वास्तविक मूल चीज़ें हैं जो आपको प्रेरित करती हैं और जो आपको मसीह से दूर ले जाती हैं। जैसे-जैसे आप जीवन में आगे बढ़ेंगे, वे चीज़ें अलग-अलग मुखौटे लेंगी।

तो यह पॉल का संघर्ष है। यह पवित्रीकरण का सिद्धांत है, तो आप परमेश्वर के सामने पवित्र कैसे बन सकते हैं? आप उससे जूझते हैं। आप उससे जूझते हैं, कभी-कभी सफल होते हैं, कभी-कभी असफल। 2 कुरिन्थियों 10:5 एक सुंदर मार्ग है, यह कहता है कि हम हर विचार को मसीह के बंदी बना लेते हैं। हम हर विचार को मसीह के बंदी बना लेते हैं। इसका मतलब यह है कि हम अपने दिल

के विचारों और इरादों पर नज़र रखते हैं और हम अपने दिल के विचारों और इरादों को मसीह को सौंप देते हैं। तो वे हर विचार को बंदी बना लेते हैं और बहुत सी लड़ाई विचारों के जीवन में होती है। आप किस तरह की चीज़ों के बारे में सोच रहे हैं और फिर मैं अब उनके बारे में सोच रहा हूँ। ठीक है। हमें यह समझना था। अंत में, हम पूर्वनिर्धारण और चुनाव और कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में बात करने जा रहे हैं जो बहुत बहस योग्य हैं। अब, यहीं से बहस शुरू होती है। पूर्वनिर्धारण और हम आपको इसका उत्तर देंगे। अब चुनाव, मुझे लगता है, मैं चुनाव में विश्वास करता हूँ। क्या कोई न्यूयॉर्क से है? क्या यहाँ कोई न्यूयॉर्क से है? हाँ, क्या आप चुनाव में विश्वास करते हैं? मुझे लगता है कि आज वास्तव में चुनाव हो रहे हैं। क्या आपने मतदान किया? तो मैं यहाँ मज़ाक कर रहा हूँ। जब आप चुनाव के बारे में बात करते हैं, तो हम न्यूयॉर्क शहर में बर्नी और हिलेरी के बीच और डोनाल्ड और बाकी दुनिया के बीच होने वाले चुनावों के बारे में सोचते हैं। और इसलिए, वैसे भी, बहुत खेद है। मैं बस इतना ही कहता हूँ, आप मेरा विश्वास करें, आप नहीं जानते कि मैं इन राजनीतिक मुद्दों पर क्या सोचता हूँ, हमारा परिवार, हम क्या सोचते हैं, मुझे क्या कहना चाहिए? अन्य परिवार फुटबॉल पसंद करते हैं, आप जानते हैं, पैट्रियट्स ब्रैडी और क्या उसने वास्तव में गेंद को डिफ्लेट किया। फिर अन्य लोग, क्या आप बास्केटबॉल जानते हैं? हमने अपने जीवन में एक समय बुल्स खेला था। वे बेसबॉल खेलते हैं। बेशक आपको बोस्टन में यहाँ मोजे खेलने होंगे। मेरा परिवार, हमारा परिवार राजनीति करता है जैसे कि अधिकांश परिवार फुटबॉल खेलते हैं। हमारा परिवार इसमें काफी रुचि रखता है। हमारे बीच बहुत बहस होती है लेकिन मुझे पिछले सेमेस्टर के बाद एहसास हुआ कि यह वास्तव में मज़ेदार था। मैंने कुछ टिप्पणियाँ कीं और छात्र पूरी तरह से। वे समझ नहीं पाए कि मेरा क्या मतलब था। तो उन्हें लगा कि मैं इस तरह से मजाक कर रहा हूँ और मैं वास्तव में उस तरह से मजाक कर रहा था। इसलिए मैंने फैसला किया कि मुझे अब इस तरह के और चुटकुले नहीं करने चाहिए। चुनाव। चुनाव क्या है? ठीक है।

चुनाव वह होता है जहाँ परमेश्वर चुनता है। परमेश्वर उन्हें चुनता है जिन्हें वह छुड़ाना चाहता है। परमेश्वर चुनता है और चुनाव का सम्बन्ध परमेश्वर के चुनाव से है। इसलिए रोमियों 8:28 में कहा गया है, "क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर उन लोगों के लिए सब बातों में भलाई के लिए काम

करता है जो उससे प्रेम करते हैं, जिन्हें बुलाया गया है" ध्यान दें कि उन्हें बुलाया गया है। वे मसीह के पास नहीं आते और मसीह में अपने आप विश्वास नहीं करते। अब यह कहा गया है "तुम परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार बुलाए गए हो जिन्हें परमेश्वर जानता था।" तो जाहिर है कि परमेश्वर ने उन्हें पहले से ही जान लिया था। "जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही जान लिया था, उन्हें उसने अपने पुत्र के स्वरूप के अनुरूप होने के लिए भी पहले से ही ठहराया था, ताकि वह बहुत से भाइयों और बहनों में ज्येष्ठ हो। और जिन्हें उसने पहले से ही ठहराया था, उन्हें बुलाया भी था।" तो परमेश्वर ने उन्हें समय से पहले ही जान लिया था। फिर वह उन्हें पहले से ही निर्धारित करता है और फिर उन्हें बुलाता है। वह उन्हें व्यक्तिगत रूप से बुलाता है और उन्हें बुलाता भी है। "जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी भी ठहराया।" तो यहाँ यह क्रम है कि उसने उन्हें पहले से ही जान लिया, उसने उन्हें पहले से ही निर्धारित किया, उसने उन्हें बुलाया और फिर उन्हें धर्मी ठहराया। "और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा दी।" तो आपको यह धारणा मिलती है कि एक व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी है और फिर वे स्वयं परमेश्वर की महिमा में भाग लेते हैं। तो यह रोमियों 8:28 है जिसका चुनाव की इस धारणा में बड़े पैमाने पर उल्लेख किया गया है। मुझे यहाँ इफिसियों 1:4 से कुछ अन्य अंश पढ़ने चाहिए ये ऐसे अंश हैं जिनका उपयोग चुनाव या पूर्वनिर्धारण के सिद्धांत के लिए किया जाता है। इफिसियों 1:4 में कहा गया है, "क्योंकि उसने हमें जगत की रचना से पहले उसमें चुन लिया।" "उसने हमें जगत की रचना से पहले उसमें चुन लिया।" तो यह पूर्वनिर्धारण है। जगत के बनने से पहले ही, उसने हमें जगत की रचना से पहले ही चुन लिया है "ताकि हम उसके सामने पवित्र और निर्दोष हों। प्रेम में, उसने हमें अपनी इच्छा और इच्छा के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा अपने बच्चों के रूप में ढालने के लिए पूर्वनिर्धारित किया।" तो मसीह में हमें गोद लेने की प्राप्ति हुई, लेकिन वह गोद लेने की घटना जगत के बनने से पहले ही ज्ञात थी। तो यह फिर से इस तरह के पूर्वनिर्धारण/चुनाव को दर्शाता है, जगत के बनने से पहले, परमेश्वर ने हमें उसमें चुना।

रोमियों 9:11 "फिर भी जुड़वाँ बच्चों से पहले," जुड़वाँ कौन हैं? याकूब और एसाव। याकूब और एसाव, फिर भी रोमियों 9:11, "फिर भी जुड़वाँ बच्चों के जन्म लेने या कुछ भी अच्छा या बुरा करने से पहले, ताकि चुनाव में परमेश्वर के उद्देश्य कर्मों से नहीं, बल्कि बुलाने वाले के द्वारा सिद्ध हों। उसे

बताया गया था, बड़ा छोटे की सेवा करेगा, जैसा कि लिखा है। याकूब, क्या मैंने एसाव से प्रेम किया है, क्या मैंने उससे घृणा की है" - उनके जन्म से पहले? "मैंने याकूब से प्रेम किया है, एसाव से घृणा की है, उनके जन्म से पहले। इससे पहले कि वे कुछ भी करें। वे पूर्वनिर्धारित थे। उन्हें चुना गया था, इस प्रकार की चीजें करने के लिए चुना गया था। अन्य अंश भी हैं। मैं सिर्फ यिर्मयाह 1:5 का उपयोग करूँगा। यिर्मयाह को यह बताया गया था, "इससे पहले कि मैं तुम्हें गर्भ में बनाता, मैंने तुम्हें जाना," "इससे पहले कि मैं तुम्हें गर्भ में बनाता, मैंने तुम्हें जाना," "इससे पहले कि मैं तुम्हें गर्भ में बनाता, मैंने तुम्हें जाना," "इससे पहले कि तुम पैदा होते, मैंने तुम्हें अलग रखा। मैंने तुम्हें राष्ट्रों के लिए एक भविष्यद्वक्ता के रूप में नियुक्त किया है।" यिर्मयाह, तुम्हारे जन्म से पहले ही, मैं तुम्हें जानता था। मैंने तुम्हें राष्ट्रों के लिए एक भविष्यद्वक्ता के रूप में अलग किया है यिर्मयाह, तुम्हारे जन्म से पहले ही। और यिर्मयाह कहता है, "अच्छा भगवान, आप जानते हैं, मेरे पास किस तरह का विकल्प था? आप जानते हैं, मेरे पास वहाँ ज़्यादा विकल्प नहीं थे।" और भगवान कहते हैं, "नहीं, तुम्हारे जन्म से पहले ही, मैंने तुम्हें पूर्वनिर्धारित कर दिया था। इसलिए, चुनाव का संबंध भगवान के चुनाव से है। अब, प्यूरिटन में से एक का डर था, क्या मैं भगवान द्वारा चुना गया हूँ? क्या भगवान ने मुझे चुना है? क्या भगवान ने मुझे भगवान के लिए पूर्वनिर्धारित किया है? अब क्या होगा अगर भगवान ने मुझे नहीं चुना? मेरा मतलब है, मैंने सोचा था कि मैं उसे चुन सकता हूँ, लेकिन अब उसने मुझे मेरे जन्म से पहले ही चुन लिया है, मेरे पास कोई मौका नहीं है। मैंने याकूब से क्या प्यार किया है, मैंने एसाव से क्या नफरत की है। क्या होगा अगर मैंने हिल्डेब्रांट से नफरत की है? वे कहते हैं, लेकिन मैंने कुछ नहीं किया। और उसने कहा, ठीक है, मैंने तुमसे तुम्हारे जन्म से पहले ही नफरत की थी। आप कहते हैं, "तो फिर मेरे पास कोई मौका नहीं है।"

तो क्या मैं प्यूरिटन किस्म का आतंक हूँ? क्या मैं चुने हुए लोगों में से हूँ? क्या मैं चुने हुए लोगों में से हूँ? जो चुने जाते हैं और इस तरह का आतंक उन पर आता है। मेरे जीवन में कई बार, मुझे लगता है कि मैंने ऐसा महसूस किया है। फिर मानवीय चुनाव ईश्वरीय चुनाव से कैसे मेल खाता है कि ईश्वर ने हमें जन्म से पहले ही चुन लिया था? यह मानवीय चुनाव से कैसे मेल खाता है? वैसे, आप में से कुछ लोग मेरे पुराने नियम की कक्षा में रहे हैं। हिल्डरब्रांट ने वास्तव में मानवीय चुनाव की बात को आगे

बढ़ाया। हाँ, ईडन के बगीचे से ही। मानवीय चुनाव वास्तव में एक बड़ी बात है। तो फिर आप इसे इस दिव्य चुनाव से कैसे जोड़ते हैं? ऐसा लगता है कि ईश्वर ने यह सब दुनिया के शुरू होने से पहले ही कर दिया था और फिर भी हम, एडम चुनाव करते हैं, ईव चुनाव करती है, कैन चुनाव करता है। तो आप इन दोनों को एक साथ कैसे जोड़ते हैं। तो मैं आगे जो करना चाहता हूँ वह अलग-अलग तरीकों से काम करना है जिससे लोग समझा सकें कि ये दोनों चीजें एक साथ कैसे चलती हैं। यह बल्कि, मुझे कहना चाहिए कि यह काफी जटिल है। तो, मैं इसे कैसे कहूँ? यही वह शोर है। यह प्रोजेक्टर है। हमें शायद इसे बंद कर देना चाहिए। इस विषय के साथ, हमें इस पूरे व्याख्यान को बंद कर देना चाहिए। इसलिए मैं अब इन स्थितियों को समझाऊंगा। वैसे, आप में से कुछ लोग वास्तव में इनमें से कुछ परंपराओं से हो सकते हैं। मैं इनमें से कई परंपराओं से हूँ। मैं एक चर्च में पला-बढ़ा हूँ। मुझे प्रेस्बिटेरियन चर्च में नियुक्त किया गया था और फिर मैं अब, कौन जानता है कि मैं कहाँ हूँ, गॉर्डन कॉलेज और वैसे भी, और इसलिए यह बस अलग है। तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि आप ऐसे लोगों से मिलने जा रहे हैं जहाँ इस विषय पर बड़ी असहमति होने जा रही है। लोग इसके लिए लोगों को चर्च से बाहर निकाल देते हैं। वैसे, इसलिए मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि आप सही उत्तर के साथ वापस आएँ--यह एक मज़ाक था। इसलिए, मुझे आपके साथ ईमानदार होना होगा, मैं आपको बताऊँगा कि मैं इस बारे में क्या सोचता हूँ, लेकिन मैं यह भी कहूँगा कि मैं अधिक दिलचस्पी रखता हूँ। कि आप मेरे दृष्टिकोण को समझें, न कि मेरी संज्ञानात्मक सामग्री को, क्योंकि आपको इस संज्ञानात्मक सामग्री के माध्यम से काम करना होगा कि आप दिव्य चुनाव और पूर्वनियति को मानवीय पसंद के साथ कैसे जोड़ते हैं। आपको इस पर काम करना होगा कि आप इसे कैसे एक साथ रखेंगे।

तो आप इन चीज़ों के साथ कैसे काम करते हैं? खैर, पहली चीज़ जिसे मैं हाइपर-कैल्विनिस्टिक कहना चाहता हूँ। अब, यह वह नहीं है जो जॉन कैल्विन ने माना था, मुझे लगता है, लेकिन यह वह है जिसे मैं कठोर नियतिवाद कहूँगा - कि ईश्वर सब कुछ करता है। दूसरे शब्दों में, यह दृष्टिकोण उस चीज़ को आगे बढ़ाता है जिसे मैं अति-सुधारवादी स्थिति कहना चाहता हूँ। ऐसे लोग हैं जो इस अति-सुधारवादी तरह की स्थिति रखते हैं। वे अच्छे हिस्से को आगे बढ़ाते हैं। मुझे सुधारवादी परंपरा के

बारे में जो पसंद है, मुझे सुधारवादी परंपरा के बारे में जो पसंद है वह यह है कि उन्होंने ईश्वर की संप्रभुता को आगे बढ़ाया, अब ईश्वर की संप्रभुता क्या है? ईश्वर की संप्रभुता का अर्थ है ईश्वर राजा है, कि ईश्वर ब्रह्मांड पर शासन करता है। ईश्वर राजा है, ईश्वर की संप्रभुता यह है कि ईश्वर राजा है और वह ब्रह्मांड पर शासन करता है। क्या यह ईश्वर बनाम शैतान है? नहीं, नहीं, नहीं। क्या यह ईश्वर बनाम शैतान है? नहीं, नहीं। ऐसा नहीं है। ईश्वर समग्र है। यह ईश्वर बनाम शैतान नहीं है। एक ईश्वर है और वह सब पर है। इसलिए संप्रभुता ईश्वर की राजसत्ता है जिस पर वह शासन करता है और राज करता है। यह यहाँ एक अच्छी बात है। ईश्वरीय, क्योंकि यह अतिवादी दृष्टिकोण है, वे मूल रूप से देखते हैं कि ईश्वर ने अपना चुनाव किया है। यह सब कार्य पूर्वनिर्धारित करके किया है। ईश्वर सब कुछ करता है और मनुष्य कुछ भी नहीं करते। इसलिए चीजें काफी निर्धारित हैं। इसलिए जब मैं इस तरह के नियतिवाद को कहता हूँ जहाँ ईश्वर सब कुछ करता है और हम लगभग रोबोट की तरह होते हैं, तो मैं पापी हूँ, मैं चुनता हूँ क्योंकि ईश्वर मुझे चुनने के लिए कहता है और इस तरह की चीजें और यह बहुत पूर्वनिर्धारित है। अतिवादी सुधारवादियों की इस स्थिति के साथ मुझे जो समस्या दिखाई देती है वह यह है कि बहुत सारे, जो भी चाहे, अंश हैं। "क्योंकि ईश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह नाश नहीं होगा, बल्कि एक वास्तविक स्थायी जीवन पाएगा।" जो भी चाहे। तो इसका बहुत कुछ मानवीय चुनाव से संबंधित है। मैंने आप लोगों को यह दिखाने की कोशिश की कि पुराने नियम में मानवीय चुनाव के बाद मानवीय चुनाव होते हैं। ईश्वर ने वास्तव में मनुष्यों के साथ बहुत ही संवादात्मक, जैविक रूप से जुड़े हुए तरीके से व्यवहार किया। मूसा ईश्वर से प्रार्थना करता है और ईश्वर उसका मन बदल देता है। भगवान कहते हैं, मैं उन्हें मिटाने जा रहा हूँ। मूसा कहते हैं, हे भगवान, कृपया उन्हें मिटाओ मत। यदि आप उन्हें मिटा देते हैं, तो यह आपके लिए बुरा होगा और वह उन्हें मिटा नहीं देता है। वह कहते हैं, मैं ऐसा नहीं करूँगा। इसलिए मूसा संख्या 13 और 14 में चला जाता है, और भगवान कहते हैं, फिर 10 छंद बाद, भगवान कहते हैं, मूसा, मैं उन्हें मिटा नहीं दूँगा जैसा कि तुमने पूछा था। इसलिए भगवान वास्तव में खुद को एक इंसान के लिए खोल देते हैं जिसका भगवान पर प्रभाव पड़ता है। वह कहते हैं, मैं उन्हें मिटा नहीं दूँगा जैसा कि तुमने मूसा से पूछा था।

तो मैं जो सुझाव देना चाहता हूँ वह यह है कि यह अतिवादी स्थिति मुझे लगता है कि पवित्रशास्त्र के कुछ भागों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अब, मैं इन भाग्यशाली कैल्विनिस्टों को क्या कहना चाहता हूँ। क्या कोई सुधारवादी परंपरा से है। वास्तव में, मुझे खेद है कि मैं अपने चेहरे पर मुस्कान के साथ ऐसा करता हूँ। कैल्विनिस्टों को "भाग्यशाली" शब्द पसंद नहीं है। इसलिए मैं इसे सिर्फ परेशान करने के लिए इस्तेमाल करना चाहता हूँ। मुझे टेप पर भी ऐसा नहीं करना चाहिए। यह भयानक है। लेकिन वैसे भी, मैं उन्हें भाग्यशाली कैल्विनिस्ट कहता हूँ, जो उनके लिए वास्तव में अपमानजनक होगा। तो मैं सिर्फ आकस्मिकता कहूँगा। मैं इसे आकस्मिकता कैल्विनवाद कहूँगा। यह क्या है? ये लोग ज़्यादा तर्कसंगत हैं और वे श्रेणियों के साथ काम करते हैं। मैं अब एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सोच रहा हूँ, जो ईश्वर को जानता है, जिसने "ईश्वर को जानना" नामक पुस्तक लिखी है, जे. आई. पैकर। वैसे भी, ईश्वर को जानना एक शानदार पुस्तक है जिसे वैकूवर में रीजेंट कॉलेज/सेमिनरी में पढ़ाने वाले व्यक्ति ने लिखा है। लेकिन वैसे भी, वह जो करता है वह यह है कि वह इन शब्दों का परिचय देता है और आइए इनमें से कुछ शब्दों पर नज़र डालें। ऑक्सीमोरोन, ऑक्सीमोरोन क्या है? अगर मैंने कहा कि एक बुद्धिमान मूर्ख, एक बुद्धिमान मूर्ख, तो यह ऑक्सीमोरोन है। ऑक्सी, मोरोन का क्या मतलब है? मोरोन का क्या मतलब है? हमें अब इसे कहने की अनुमति नहीं है। यह राजनीतिक रूप से गलत है, लेकिन मोरोन का मतलब मूर्ख होता है। ऑक्सी का मतलब बुद्धिमान जैसा होता है। तो ऑक्सीमोरोन का मतलब बुद्धिमान मूर्ख होता है वैसे, ये शब्द आपस में टकराते हैं। ऑक्सीमोरोन। तो कुछ वास्तव में मूर्खतापूर्ण है। यह गर्म ठंडा या ऐसा कुछ है। ऐसे अर्थ जो एक साथ काम नहीं करते। आप जानते हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ? इसे ऑक्सीमोरोन कहते हैं।

ये आकस्मिक कैल्विनिस्ट, ये हैं, शायद मुझे उनके लिए बेहतर शब्द मिल जाए। शायद उन्हें शांत, कैल्विनिस्ट कहें। जो लोग वास्तव में कठोर हैं, वे नियतिवादी हैं। वे अल्पसंख्यक हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश इस पर काम करते हैं जिसे मैं नरम कैल्विनवाद कहता हूँ। या हम कह सकते हैं कि एक बड़े आर के साथ सुधार हुआ है और ये, ये नरम लोग थोड़े आर के साथ सुधार हुए हैं। मुझे लगता है कि शायद उनमें से कुछ ने खुद को इस तरह से वर्णित किया है। बड़े, आर के साथ थोड़े आर सुधार वाले लोग। वे इस दूसरी श्रेणी के बारे में बात करते हैं, जो कि एंटीनॉमी की श्रेणी है।

ठीक है। क्या आप यहाँ दूसरा शब्द देखते हैं? यह एंटीनॉमी कहता है। एंटीनॉमी का मतलब है कि आपके पास दो चीजें हैं जो विरोधाभासी लगती हैं। आपके पास दो चीजें हैं जो विरोधाभासी लगती हैं और आप नहीं जानते कि वे एक साथ कैसे फिट होती हैं। इसलिए आप उन दोनों पर विश्वास करते हैं लेकिन आप उन्हें एक साथ फिट नहीं कर सकते। इसे एंटीनॉमी कहा जाता है। ऐसी दो चीजें हैं जो एक-दूसरे के विपरीत लगती हैं, लेकिन उन्हें किसी तरह एक साथ काम करना चाहिए, लेकिन हम नहीं समझ पाते कि वे एक साथ कैसे फिट होती हैं। तो यह जेआई पैकर की स्थिति है।

धन्यवाद। यह विरोधाभास दो चीजें हैं, ईश्वर की संप्रभुता के संदर्भ में कि वह लोगों को चुनता है और पूर्वनिर्धारित करता है और लोग फिर भी चुनते हैं। आप उन्हें एक साथ कैसे फिट करते हैं? वह कहते हैं, मूल रूप से, हमें उन दोनों चीजों पर विश्वास करना होगा। हमें उन दोनों पर विश्वास करना होगा, लेकिन वे एक साथ कैसे फिट होती हैं, हमें कोई सुराग नहीं है कि उन्हें एक साथ कैसे फिट किया जाए। इसलिए इसलिए इसे वह विरोधाभास कहते हैं।

मुझे इस दृष्टिकोण के बारे में जो पसंद है वह यह है कि यह आपको रहस्य और आश्चर्य से भर देता है। आप महसूस करते हैं कि आपको शास्त्र में दो ऐसी चीजें मिली हैं जिनके बारे में आप आश्चर्य करते हैं। वे रहस्य और आश्चर्य का कारण बनती हैं। मुझे यह विरोधाभासी दृष्टिकोण पसंद है। इसके बारे में कुछ बहुत अच्छी बातें हैं। अब, विरोधाभास क्या है? विरोधाभास विरोधाभासी से अलग है। विरोधाभासी में दो चीजें हैं जो विपरीत दिखती हैं, जिनके बारे में हम नहीं जानते कि वे एक साथ कैसे फिट होती हैं। विरोधाभास कुछ इस तरह होता है। मैं आपको यह कहानी पढ़कर सुनाता हूँ जो यहाँ विरोधाभास के लिए एक दिलचस्प बात है। यह कहता है, उदाहरण के लिए, यह एक विरोधाभास है। एक ऐसी स्थिति पर विचार करें जिसमें एक पिता और एक बेटा सड़क पर गाड़ी चला रहे हैं। कार एक पेड़ से टकरा जाती है और पिता की मौत हो जाती है। कार एक पेड़ से टकरा जाती है। पिता की मौत हो जाती है और लड़के को निकटतम अस्पताल ले जाया जाता है जहाँ वह आपातकालीन सर्जरी की तैयारी कर रहा है। सर्जन कहता है, मैं इस लड़के का ऑपरेशन नहीं कर सकता। वह मेरा बेटा है। यह एक विरोधाभास है। अब, विरोधाभास क्या है? विरोधाभास वह है जो आपको सोचने पर मजबूर करता है? आप कहते हैं, एक मिनट रुकिए। विरोधाभास वह होता है जो



पूरी तरह से विरोधाभासी लगता है, लेकिन क्या यह आपको इसे समझने की कोशिश करने के लिए बुलाता है? यहाँ कुछ ऐसा है जो गायब है जिसके बारे में हमें नहीं बताया गया है कि हमें इसका पता लगाना है। तो यह एक पहेली की तरह है, एक विरोधाभासी पहेली। यह एक पहेली की तरह है। यह आपको यह कहने के लिए बुलाता है, हम्म, मुझे आश्चर्य है कि यह कैसे काम करता है? आप जानते हैं, लेकिन आपने अभी मुझे बताया कि पिता दुर्घटना में मारे गए थे। अगर वह दुर्घटना में मारे गए हैं, तो एक मृत व्यक्ति अपने बेटे का ऑपरेशन कैसे कर सकता है? और फिर आपका दिमाग सोचने लगता है, हम्म, यह व्यक्ति कैसे कह सकता है, फिर वे

उसे अस्पताल ले जाओ। मैं अपने बेटे का ऑपरेशन नहीं कर सकता, यह उसकी माँ थी। आप में से बहुत से लोग इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह उसकी माँ थी? मैं कुछ लोगों के सिर हिलते हुए देख रहा हूँ। आप मुझसे ज़्यादा समझदार हैं। मैं, आप जानते हैं, जब मैं वास्तव में था, तो वहाँ एक माँ थी। इसलिए पिता की हत्या कर दी गई। माँ कहती है कि यह मेरा बेटा है। और इस तरह से दोनों को समझाया गया। क्या मैं सोच रहा था क्योंकि मैं पिता की बात पर अटका हुआ था और देखो कि विरोधाभास क्या होता है। मैं सोच रहा था कि यह सौतेला पिता था। क्या किसी ने सौतेले पिता के बारे में सोचा? धन्यवाद। मैं बस इतना चिंतित था। मैं माँ की बात को पूरी तरह से भूल गया। और फिर मुझे लगा कि मैं एक बेवकूफ़ हूँ। लेकिन इसे विरोधाभास कहा जाता है। कुछ ऐसा जो आपको अंदर बुलाता है और आप उससे जूझने की कोशिश करते हैं, वह विरोधाभास है। मुझे जो इस पुस्तक में जेआई पैकर ने किया है, संप्रभुता और ईश्वर की इच्छा, मूल रूप से वह यह है कि, वह इसे दो चीज़ों के विरोधाभास के रूप में देखता है जो विरोध करती हैं और हम नहीं जानते कि वे एक साथ कैसे फिट होती हैं। इसलिए यह हमें रहस्य और आश्चर्य की ओर आकर्षित करता है और ईश्वर के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है। तो यही है आकस्मिकता या भाग्यशाली कैल्विनिस्ट। आप कभी भी भाग्यशाली कैल्विनिस्ट शब्द का प्रयोग न करें, वे वास्तव में आपसे नाराज़ हो जाएंगे। बस इतना जान लीजिए, मुझे शायद इसे यहाँ से हटा देना चाहिए। अब मैं आपको कैल्विनवाद की मूल बातें बताना चाहता हूँ और मैं आपको एक तरह का सुधारवादी दृष्टिकोण दूँगा, जो पहले हुआ करता था। दूसरे शब्दों में, मैं पहले सुधारवादी था, लेकिन अब मैं उससे दूर हो गया हूँ। तो मैं ऐसा कहता हूँ

और फिर लोग कहते हैं, ठीक है, तो वे जानते हैं कि मुझे पर भरोसा नहीं करना चाहिए। शायद यह सही है। आपको बाइबल पर भरोसा करने की ज़रूरत है, न कि मेरी कही बातों पर। लेकिन यहाँ, यहाँ मूल रूप से वह है जिसे वे ट्यूलिप कहते हैं। यह तब होता है जब आप कैल्विनवाद में प्रवेश करते हैं, ये कैल्विनवाद के पाँच बिंदु हैं। यह एक बड़ी बात है। तो ट्यूलिप, प्रवेश स्तर का कैल्विनवाद है।

वे कहेंगे, सबसे पहले, कैल्विनवाद, कुल भ्रष्टता। कुल भ्रष्टता कि लोग पापी हैं। हम अपने अस्तित्व के मूल में पापी हैं। हम पापी हैं, पूरी तरह से भ्रष्ट हैं। रोमियों 1, 2, और 3, जहाँ हम जीवन के दोषों में लिप्त हैं और हम सद्गुणों को भूल जाते हैं। तो मूल रूप से, हम पूरी तरह से भ्रष्ट हैं। अब मैं इनमें से प्रत्येक की आलोचना करने जा रहा हूँ क्योंकि मैं चिड़चिड़ा हूँ, लेकिन मैं कैसे कहूँ? मेरा मानना है कि लोग भ्रष्ट हैं। लेकिन जब मैं पूरी तरह से भ्रष्ट लोगों को देखता हूँ, तो मैंने बड़े होते हुए जो देखा वह यह था कि जब लोग यह मानते थे कि लोग पूरी तरह से भ्रष्ट हैं, तो वे अक्सर दूसरों को देखकर कहते थे कि ये छात्र हैं, ये सहस्राब्दी के छात्र पूरी तरह से भ्रष्ट हैं। वे हमेशा दूसरों को बाहर की ओर देखते रहते हैं। मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि मुझे लगता है कि पूरी तरह से भ्रष्टता के दृष्टिकोण से अंदर की ओर देखना अधिक समझदारी की बात है। इसलिए जब मैं बाहर की ओर देखता हूँ, तो मैं आप लोगों को वास्तव में ईश्वर की छवि में बनाए गए रूप में देखने की कोशिश करता हूँ। वैसे, क्या यह पूरी तरह से नकारात्मक है या यह वास्तव में सकारात्मक है? यह वास्तव में सकारात्मक है। तो क्या होता है कि मैं दूसरों को भगवान की छवि के रूप में देखना चुनता हूँ। जब मैं खुद को देखता हूँ, तो मुझे प्रक्रिया करनी होती है और मैं कहता हूँ, "यार, तुम्हारे कुछ विचार। मुझे यह करने की ज़रूरत है। मुझे इस बारे में सोचने की ज़रूरत है और मेरे विचार सही नहीं हैं। मुझे और चीज़ों पर काम करने की ज़रूरत है। तो वैसे भी कुल भ्रष्टता टी है। मुझे भ्रष्टता पसंद है, लेकिन मुझे "कुल" भ्रष्टता शब्द पसंद नहीं है। वैसे, क्या एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति भी जो मसीह को नहीं जानता, क्या वह कुछ अच्छा हो सकता है?

मैंने आपको बताया कि मैंने एक अधिकतम सुरक्षा जेल में काम किया है। इंडियाना का वह आदमी जिसके खिलाफ आजीवन कारावास की सजा की संख्या का राज्य रिकॉर्ड है। वह अमेरिका के 10 सर्वाधिक वांछित लोगों में से एक है। मैं कहानी बताऊंगा। हालांकि मुझे टेप के साथ सावधान रहना चाहिए। लेकिन फिर भी, मैं कहानी बताऊंगा। वह वास्तव में अधिकतम सुरक्षा जेल से भाग गया। बेहतर होगा कि मैं उसका नाम भी न बताऊं क्योंकि यह टेप पर है, लेकिन मैं उसे चार्ली कहूंगा। चार्ली मेरा अच्छा दोस्त है। क्या जेल में उसके खिलाफ 11 आजीवन कारावास की सजा है। वे उसे मिस्टर चार्ली कहते हैं। अब जब वे आपको मिस्टर कहते हैं। जेल में, वह अधिकतम सुरक्षा जेल है। क्या इसका कोई मतलब है? वे किसी को मिस्टर नहीं कहते। वे उसे मिस्टर कहते हैं इसका मतलब है कि वह एक बुरा आदमी है। हर कोई इस आदमी को जानता है। उसकी काफी प्रतिष्ठा है। वह मेरा निजी दोस्त है। अब, चार्ली के साथ भी, क्या उसमें अच्छाई है? क्या उसमें अच्छाई है? आप कहते हैं कि उसने वह सब बुरा काम किया, उन लोगों ने और वह भाग्यशाली है कि उसे फांसी नहीं हुई। क्या अभी भी उसमें अच्छाई है। मुझे बस इतना ही करना है और मैं नाम का इस्तेमाल करता हूँ और बेहतर होगा कि मैं बाकी कोई भी बात न कहूँ। वह जेल से भाग गया। आप जानते हैं उसने क्या किया? वह चला गया, अब आप कहते हैं, अच्छा, यह आदमी कई हत्यारा है, और यह आदमी भयानक व्यक्ति है। जेल से बाहर आने के बाद उसने क्या किया, वह न्यूयॉर्क शहर गया और वह किसके साथ काम कर रहा था?

न्यूयॉर्क शहर में गरीब और बेघर लोगों की मदद करने की कोशिश कर रहा था। वह न्यूयॉर्क शहर में बेघर और गरीब लोगों की मदद करने में इतना सफल रहा कि वह मेयर के साथ खड़ा था। न्यूयॉर्क के मेयर को नहीं पता था कि वह कौन है। वह उसे सम्मानित कर रहा था, उसे मंच पर रख रहा था और बूढ़ा चार्ली मंच पर था। समाचार मीडिया आया, एक तस्वीर दिखाई, और जेल के लोगों ने कहा, देखो, चार्ली है। वे गए और उसे उठा लिया। लेकिन वह बेघर लोगों की मदद कर रहा था। न्यूयॉर्क शहर के मेयर ने उसे मंच पर रखा, उन्हें नहीं पता था कि वह कौन है। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने उसे पकड़ लिया। वैसे, क्या वह लोगों की मदद करने के लिए अपने दिल की भलाई से ऐसा कर रहा था, मैं गंभीरता से कह रहा हूँ क्या वह अपने दिल की भलाई से ऐसा कर

रहा था? क्या वह पूरी तरह से बुरा व्यक्ति था? मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि उसने कुछ वाकई बहुत बुरा काम किया। लेकिन फिर वह कुछ वाकई अच्छे काम भी करता है। तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि उस शब्द कुल भ्रष्टता के विचार से सावधान रहें। तो आप कहते हैं कि हिल्डेब्रांट को "कुल" शब्द पसंद नहीं है। आप जानते हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ, हाँ, हम भ्रष्ट हैं, लेकिन "कुल" वाली बात मत करो। अब दूसरा बिना शर्त चुनाव कहलाता है। यह हमारे ट्यूलिप में चल रहा है। इसका मतलब है कि भगवान हमें चुनता है। हममें कुछ भी अच्छा नहीं है कि भगवान कहते हैं, "ठीक है, मुझे कुछ ऐसे लोग चाहिए जो वहाँ हैं। यह अच्छा है और इसलिए मैं उसे चुनता हूँ क्योंकि मुझे पता है कि वह बहुत अच्छा इंसान होगा। मैं याकूब को चुनता हूँ क्योंकि याकूब बहुत चरित्रवान व्यक्ति था। याकूब, क्या तुम्हें याकूब याद है? क्या तुम्हें एसाव याद है? सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के मामले में किसमें चरित्र था? एसाव, और फिर भी भगवान याकूब को चुनते हैं। याकूब धोखेबाज़ और झूठा होगा। वह अपने पिता से झूठ बोलेगा, वगैरह, वगैरह। इसलिए बिना शर्त चुनाव का मतलब है कि कोई शर्त नहीं है। भगवान चुनते हैं। भगवान चुनते हैं कि वह किसे चुनेंगे। इस पर कोई शर्त नहीं है। कोई शर्त नहीं है, मैं कैसे कहूँ, वह किसी व्यक्ति में देखता है और उसमें उसकी अच्छाई देखता है। नहीं, नहीं। यह बिना शर्त चुनाव है। पूर्वनिर्धारण केवल ईश्वरीय पसंद पर आधारित है। इसके अलावा और कुछ नहीं है। यह भगवान की पसंद है। उसने उसे चुना। उसने उसे क्यों चुना? हम नहीं जानते। भगवान ने बस उसे चुना। क्या उसने उन्हें चुना क्योंकि वे इतने अच्छे थे? नहीं, नहीं। भगवान ने उसे इसलिए चुना क्योंकि उसने उसे चुना था। इसलिए इसे बिना शर्त चुनाव कहते हैं। मेरे पास है, मुझे नहीं पता कि भगवान का दिमाग कैसे काम करता है, इसलिए मुझे नहीं पता, मुझे बिना शर्त शब्द पसंद नहीं है। मैं कहना चाहता हूँ कि भगवान लोगों को चुनता है, लोगों को चुनता है, हाँ। क्या भगवान के पास शायद अपने कारण हैं? भगवान के पास शायद अपने कारण हैं

उसके कारण। इसलिए मैं इसे बिना शर्त नहीं कहना चाहता। ऐसी परिस्थितियाँ हो सकती हैं जिनके द्वारा परमेश्वर इस तरह के चुनाव करता है। मुझे यह नहीं पता। इसलिए मैं फिर से कहना चाहता हूँ, मुझे चुनाव शब्द पसंद है, लेकिन मुझे बिना शर्त शब्द पसंद नहीं है। क्योंकि वहाँ ऐसी परिस्थितियाँ

हो सकती हैं जिनके बारे में हम नहीं जानते। अब, एक और, वास्तव में, मुझे बस इन अगले लोगों को जल्दी से बताना है। सीमित प्रायश्चित। सीमित प्रायश्चित। और यह मूल रूप से यह है कि प्रायश्चित उन लोगों के लिए दिया जाता है जो चुने हुए हैं। कि प्रायश्चित चुने हुए लोगों के लिए दिया जाता है। दूसरे शब्दों में, मसीह किसके लिए मरा। मसीह किसके लिए मरा? मसीह चुने हुए लोगों के लिए मरा, उन लोगों के लिए जो बचाए जाएंगे। मसीह केवल चुने हुए लोगों के लिए मरा। इसलिए सीमित प्रायश्चित है। प्रायश्चित केवल उन लोगों पर लागू होता है जिनके लिए मसीह मरा। इस पर मेरी समस्या फिर से, मुझे प्रायश्चित की धारणा पसंद आई, कि मसीह हमारे पापों को दूर करने के लिए, हमारी शर्म को ढकने के लिए हमारे पापों के लिए मरा - यह सुंदर है। प्रतिस्थापन प्रायश्चित। यशायाह 53 सुंदर है। आप जानते हैं, उस पर हमारे अधर्म को वध से पहले मेमने के रूप में रखा गया था और मसीह हमारे अधर्म को, हमारे पापों को दूर ले जाता है। यह सुंदर है। इसलिए मुझे प्रतिस्थापन प्रायश्चित की अवधारणा और प्रायश्चित के विभिन्न सिद्धांत पसंद हैं, लेकिन सीमित प्रायश्चित कहना, मुझे बस वह शब्द "सीमित" पसंद नहीं है। यहाँ 1 यूहन्ना 2:2 में क्या कहा गया है। मसीह किसके लिए मरा? यहाँ कहा गया है, "वह," यीशु "हमारे पापों के लिए प्रायश्चित बलिदान है और वह केवल हमारे लिए, बल्कि पूरे संसार के पापों के लिए भी है।" - "पूरे संसार के पापों के लिए।" तो दूसरे शब्दों में, बाइबल प्रायश्चित को सीमित के रूप में चित्रित नहीं करती है, बल्कि मसीह पूरे संसार के पापों के लिए मरता है। और यही मैं सोचता हूँ। इसलिए, मुझे प्रायश्चित का विचार पसंद है, लेकिन मैं बस यही चाहता हूँ कि वे "सीमित" शब्द से छुटकारा पा लें।

फिर अप्रतिरोध्य अनुग्रह है। जब अनुग्रह किसी व्यक्ति पर आता है, तो वह अप्रतिरोध्य होता है। यह अप्रतिरोध्य अनुग्रह है। अब, वैसे, क्या मैं ईश्वर की कृपा में विश्वास करता हूँ? बहुत ज़्यादा। अपने जीवन के 20 वर्षों तक, मैंने ग्रेस कॉलेज नामक एक स्कूल में काम किया। जब मैंने विनोना लेक इंडियाना में उस स्कूल ग्रेस को छोड़ा, जब मैंने उस स्कूल को छोड़ा, तो मेरा दिल टूट गया क्योंकि मैं ग्रेस को छोड़ रहा था। मैं ग्रेस को छोड़ रहा था और यह मेरे लिए कुछ मायने रखता था क्योंकि ईश्वर की कृपा यहीं है। ईश्वर की कृपा ही वह जगह है जहाँ हम सभी हैं। तो लेकिन जब वे अप्रतिरोध्य अनुग्रह कहते हैं, तो मेरी आपत्ति क्या है? मेरी आपत्ति एक बार फिर, "अप्रतिरोध्य"

शब्द पर है। वे सिर्फ ईश्वर की कृपा क्यों नहीं कहते और उस पर अप्रतिरोध्य क्यों लिखते हैं। अब ईश्वर अप्रतिरोध्य हो सकता है। यिर्मयाह, आप उसे कहते हुए देखेंगे, भगवान, आप जानते हैं, आप मेरे साथ ये सब कर रहे हैं, भगवान और मुझे ये पसंद नहीं है लेकिन मैं, आप जानते हैं, आप ये कर रहे हैं। मैं आपसे लड़ने वाला कौन होता हूँ? भगवान, मैं ये नहीं कर सकता। तो उसे अप्रतिरोध्य अनुग्रह का सामना करना पड़ता है, लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि क्या अनुग्रह हमेशा अप्रतिरोध्य होता है? क्या हमारे पास चुनाव करने की क्षमता है? और जब आप अप्रतिरोध्य अनुग्रह कहते हैं, तो ये मानवीय चुनाव से दूर ले जाता है। तो मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वो ये है कि मुझे अनुग्रह की अवधारणा पसंद है। मैं इससे पूरी तरह से प्यार करता हूँ। वास्तव में। अगर आप किसी को अनुग्रह करते हुए सुनना चाहते हैं, तो वेबसाइट पर अनुग्रह करने वाले सबसे अच्छे लोगों में से एक। मैंने एक लड़के का टेप किया, असल में वो मेरा एक भाई है जो मेरी माँ से अलग है। उसका नाम डॉ. डैन डार्को है, अपने कोर्स में वो जेल एपिस्टल्स में भगवान के अनुग्रह के बारे में सबसे अच्छे तरीके से समझाता है जैसा मैंने अपने जीवन में किसी और से सुना है। यह बस, मेरा मतलब है, मैं सचमुच, इस आदमी को टेप कर रहा था और मैं लगभग आँसू में था क्योंकि वह इफिसियों और अन्य स्थानों में ईश्वर की कृपा की सुंदरता का वर्णन बहुत अच्छी तरह से कर रहा था। इसलिए यदि आप कभी जेल पत्र, इफिसियों, फिलिपियों, कुलुसियों पर डार्को के व्याख्यान में गए हैं, तो वे ईश्वर की कृपा पर अद्भुत व्याख्यान हैं। इसलिए ईश्वर की कृपा वास्तव में वहीं है जहाँ यह है। लेकिन अप्रतिरोध्य को जाने दें।

फिर अंत में संतों की दृढ़ता। अब यह, मुझे पूरी बात पसंद है, संतों की दृढ़ता। यह अच्छा है और इसका संबंध शाश्वत सुरक्षा से है। दूसरे शब्दों में, यदि आप एक बार बचाए गए हैं, तो क्या आप हमेशा के लिए बचाए गए हैं? और क्या भटक जाना संभव है? क्या भटक जाना संभव है? संतों की दृढ़ता? मुझे संतों की दृढ़ता वाक्यांश पसंद है। दूसरे शब्दों में, यदि आप एक ईसाई हैं, तो आप दृढ़ रहेंगे। मुझे यह शाश्वत सुरक्षा से बेहतर लगता है। शाश्वत सुरक्षा सामाजिक सुरक्षा की तरह लगती है। यह भी सुरक्षा है, वास्तव में ठोस है, है न? आप लोग कभी भी उस चीज़ को नहीं देखेंगे। जब आप तनख्वाह कमाना शुरू करते हैं और वे आपके वेतन से एक बड़ा हिस्सा काट लेते हैं, तो मान

लीजिए, बूढ़ा हिल्डेब्रांट हंस रहा था क्योंकि वह जानता था कि आपको इसका एक पैसा भी नहीं मिलेगा। मुझे खेद है, यह मेरी ओर से वास्तव में बीमार करने वाला है। लेकिन मैं जो कह रहा हूँ वह एक सामाजिक सुरक्षा है। हम इस बारे में बात करते हैं और इसलिए जब हम शाश्वत सुरक्षा के बारे में बात करते हैं, तो यह मुझे शांत कर देता है और मैं शाश्वत रूप से सुरक्षित महसूस करता हूँ। मुझे संतों की दृढ़ता अधिक पसंद है कि संत दृढ़ रहेंगे और यह अधिक वर्णनात्मक है, लेकिन वैसे, क्या बाइबल में ऐसे लोग हैं जो वास्तव में भटक गए? क्या बाइबल में ऐसे लोग हैं जो भटक गए? क्या यहूदा, क्या यीशु ने यहूदा को अपने नाम पर चमत्कार करने के लिए भेजा था? मैथ्यू अध्याय 10 में वह 12 को भेजता है। यहूदा यीशु के नाम पर चमत्कार कर रहा है। जैसे ही यहूदा मसीह से दूर हो जाता है और चला जाता है। सुलैमान के बारे में क्या? क्या आप लोगों को सुलैमान याद है, जो अब तक का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति था, भगवान उसके पास आए और कहा, सुलैमान, तुम जो भी मांगना चाहते हो, मांगो। कोई कहता है कि उन्हें ज्ञान चाहिए और, और मुझे एक सुनने वाला दिल चाहिए जो सही और गलत को समझ सके। और भगवान ने उसे वह दिया जो वह चाहता था। सुलैमान, अपने जीवन के अंत में मूर्तिपूजक मूर्तियों की पूजा कर रहा है। वह अपनी पत्नियों के लिए मंदिर बना रहा है और अपने जीवन के अंत में मूर्तियों की पूजा कर रहा है। तो आपको इस तरह की चीजें मिलती हैं। क्या इस्राएली भटक गए? वे मिस्र से बाहर आए और वे परमेश्वर के साथ रेगिस्तान में चले गए। परमेश्वर स्वर्ग से मन्ना बरसाता है। और वे क्या करते हैं? वे कहते हैं, अरे, हम मिस्र वापस जाना चाहते हैं। और इसलिए इस्राएली भटक जाते हैं। तो मैं बस यही सोच रहा हूँ, क्या यह संभव है कि कोई व्यक्ति परमेश्वर को जाने और भटक जाए? क्या किसी को बालाम की संख्या 22-24 याद है। बालाम परमेश्वर को जानता है और फिर भी परमेश्वर से दूर जाकर कुछ बहुत बुरे काम करता है।

तो मैं जो कह रहा हूँ, लेकिन मैं इसे और व्यक्तिगत रूप से कहूँगा। क्या आप अपने परिवार में लोगों को जानते हैं? मैं अब खुद से बात कर रहा हूँ, क्या मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ, मेरे परिवार ने दावा किया कि वे अपने जीवन के एक निश्चित बिंदु पर ईश्वर को जानते थे और फिर दूर हो गए? जवाब है हाँ, हाँ। मैं अभी भी खुद कुछ के साथ काम कर रहा हूँ। जब आपके बच्चे हों तो यह

वास्तव में बहुत कठिन होता है। तो वैसे भी, संतों की दृढ़ता कि सच्चे संत दृढ़ रहेंगे। वैसे, इसका मतलब सीधी रेखा भी नहीं है। आप अपने ईसाई धर्म में कैसे दृढ़ रहते हैं? कभी-कभी यह ऊपर होता है। कभी-कभी यह आपके द्वारा इसे प्राप्त करने पर निर्भर करता है। आप जानते हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ? आपने ईसाइयों को टूटते देखा है। लेकिन इसे ट्यूलिप कहा जाता है और ये कैल्विनवाद के पाँच बुनियादी बिंदु हैं। क्या आपने देखा कि मैंने उनमें से लगभग हर एक के साथ क्या किया? मैंने "कुल" लिया, मैंने बिना शर्त, सीमित और अनूठा लिया और उन्हें दूर कर दिया। मुझे उनकी अवधारणाएँ बहुत पसंद हैं, संतों की दृढ़ता। मुझे यह तरीका पसंद है कि उन्होंने कहा कि वहाँ दृढ़ता है क्योंकि क्या पतन संभव है? यह एक बड़ा सवाल है और आपको इस पर विचार करना चाहिए। तो ये वे हैं जिन्हें कैल्विनवाद के पाँच बिंदु कहा जाता है। और हम पाँच बिंदु पार कर चुके हैं। तो चलिए इन अवधारणाओं के साथ काम करते समय थोड़ा विराम लेते हैं। कई बार TULIP जैसी धार्मिक अवधारणाएँ होती हैं जिनमें कुछ अद्भुत सत्य होते हैं और मैं उन्हें संशोधित करने का प्रयास कर रहा हूँ। मैं धार्मिक निर्माणों में बहुत अधिक नहीं जाता क्योंकि धार्मिक निर्माण, ऐसा लगता है कि वे तार्किक रूपों और इतिहास में शास्त्रों से चीज़ें बनाते हैं और वे इस निर्माण का निर्माण करते हैं। मैं ज़्यादातर शास्त्रों के करीब रहने की कोशिश करता हूँ और शास्त्र वास्तव में जो कहता है, वही मैं मानता हूँ। इसलिए जब आप इन तार्किक निर्माणों का निर्माण करना शुरू करते हैं, तो मुझे लगता है कि मेरी समस्या यह है कि मैं तर्क पर भरोसा नहीं करता। मैं तर्क सिखाता था। मैं बस उस पर भरोसा नहीं करता। तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि मैं पदानुक्रम बनाने के बजाय पाठ के करीब जाने की कोशिश करता हूँ, यह इससे संबंधित है क्योंकि आप यह अनुमान लगा सकते हैं और आप वह अनुमान लगा सकते हैं और आप पवित्रशास्त्र के शीर्ष पर यह निर्माण करते हैं। मैं पवित्रशास्त्र के बहुत करीब जाने की कोशिश करता हूँ क्योंकि मुझे खुद पर भरोसा नहीं है। मैं पूरी तरह से भ्रष्ट हूँ और मैं इस तरह के निर्माण के लिए अपने दिमाग पर भरोसा करूँगा। इसलिए, मैं कहानियों के साथ रहता हूँ और आप देखेंगे कि मेरी बहुत सी कक्षाओं में हम कहानियों के साथ बहुत कुछ करते हैं क्योंकि कहानियाँ हमें ज़मीन पर अपने पैरों के साथ रखती हैं।



तो बिना शर्त चुनाव और इस तरह की चीजें कैल्विनवादी हैं। एक दृष्टिकोण है, सुधार के विपरीत यह आर्मिनियन दृष्टिकोण होगा। अगर मैं सुधार कहता हूँ, तो यह अधिक प्रेस्बिटेरियन चर्च होगा। कैल्विन से पुइस्टनवाद और उस तरह की चीजों में सुधार हुआ। आर्मिनियन दृष्टिकोण, मूल रूप से वे भगवान के पूर्वज्ञान के साथ बहुत काम करते हैं जिसे भगवान जानते हैं। आर्मिनियन इसके विपरीत है। जबकि सुधार भगवान की संप्रभुता पर जोर देता है, जो वास्तव में एक अच्छी बात है कि भगवान यह सब करते हैं। आर्मिनियन मूल रूप से मानव विकल्प पर जोर देते हैं। फिर मूल रूप से वे पूर्वज्ञान को देखते हैं कि भगवान आपके लिए क्या चुनते हैं। दुनिया की नींव से पहले, भगवान ने इतिहास को देखा और वह जानता था कि आप क्या चुनेंगे। तो फिर इसलिए भगवान ने आपको अपने पूर्वज्ञान के आधार पर चुना कि आप क्या चुनेंगे। इसलिए आर्मिनियन दृष्टिकोण चीजों के अधिक मानवीय पक्ष पर जोर देता है और यह कि पूर्वगामी अनुग्रह सभी के लिए खुला है। अनुग्रह सभी के लिए खुला है। वे अधिक मानवीय विकल्प और उस तरह की चीजों पर जोर देते हैं। अब, मेरे साथ कुछ साल पहले जो हुआ, वह यह था कि ईश्वर के खुलेपन नामक एक आंदोलन था जिसकी ETS (इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी) की बैठकों में बहुत कड़ी निंदा की गई थी। मैं बस इतना कहना चाहता हूँ, मुझे लगता है कि यह एक अतिशयोक्ति थी। सुधारवादी लोग वास्तव में इन लोगों से परेशान हो गए और उनके पीछे पड़ गए, विशेष रूप से जॉन सैंडर्स और कुछ अन्य लोग। मैं कहना चाहता हूँ, मुझे लगता है कि इस पर कुछ अतिशयोक्ति थी। खुलेपन के लोग जो कहते हैं वह यह है कि भविष्य खुला है और हम भविष्य को आकार देने में ईश्वर के साथ भागीदार हैं। कि हम चुनाव करते हैं, कि हम भविष्य में आगे बढ़ते हुए ईश्वर के साथ भागीदार हैं। और इसलिए ईश्वर विशेष कार्य चुनते हैं। ईश्वर कुछ व्यक्तियों के लिए विशेष कार्य चुनते हैं। अर्थात्, पॉल को प्रेरित होने के लिए बुलाया गया था। यशायाह को भविष्यवक्ता होने के लिए बुलाया गया था। यिर्मयाह को उसके जन्म से पहले ही बुलाया गया था। ईश्वर ने उन्हें बताया।

लेकिन क्या आपको पुराने नियम में याद है, कैसे मैंने आपको यह सुझाव देने की कोशिश की थी कि परस्पर भविष्य हैं। कई भविष्य हो सकते हैं और भगवान इन कई भविष्यों को जानने का चुनाव करते हैं और विभिन्न तरीकों से। कभी-कभी भगवान हमें अपना वचन देते हैं कि यीशु मसीह

यहूदिया के बेथलेहम में पैदा होंगे। एक बार भगवान हमें एक वादा देते हैं कि यीशु मसीह, मीका 5:2 यहूदिया के बेथलेहम में पैदा होंगे, यीशु यहूदिया के बेथलेहम में पैदा होंगे क्योंकि भगवान ने हमें अपना वचन दिया है। लेकिन कई अन्य चीजें हैं जो मेरे कहने जैसी होंगी, "मैं नियाग्रा फॉल्स, न्यूयॉर्क में अपने घर जा रहा हूँ। मैं नियाग्रा फॉल्स, न्यूयॉर्क में अपने घर जा रहा हूँ। क्या वहाँ पहुँचने के कई तरीके हैं? तो मुझे पता है कि अंतिम नियति नियाग्रा फॉल्स है, लेकिन वहाँ जाने के कई तरीके हैं। तो मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि भगवान भविष्य में कुछ चीजों को ठीक कर सकते हैं, लेकिन अन्य चीजों को खुला छोड़ दिया जाता है और मनुष्य भगवान के साथ भाग लेते हैं जो खुद भी भाग लेते हैं। तो कई संभावित भविष्य हो सकते हैं। मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि भगवान केवल एक ही भविष्य नहीं जानते हैं, मुझे लगता है कि शायद यही तरीका है कि भगवान A, B, C, D, E, F, G को एक ही भविष्य रेखा के रूप में नहीं जानते हैं। इसके बजाय वह भविष्य को संभावना के रूप में जानना चुनता है। हमने पुराने नियम में कुछ स्थानों को दिखाया जैसे 1 शमूएल 15 जब डेविड कीला शहर की ओर भागता है, जहाँ भगवान कुछ ऐसा जानते हैं जो कभी नहीं हुआ। भगवान कुछ ऐसा जानते थे जो कभी नहीं हुआ। और इसलिए भगवान कुछ ऐसा जानते हैं जो संभव है लेकिन वास्तव में ऐसा कभी नहीं हुआ। क्या आपको याद है कि उसने राजा शाऊल से क्या कहा था? प्रथम शमूएल 13:13 में वह शाऊल से कहता है, उसने कहा, शाऊल अगर तूने मेरी बात मानी होती तो मैं तेरे वंशजों को हमेशा के लिए इस्राएल पर राज करने देता। तू राजा होता और तेरे वंशज शाऊल, इस्राएल पर राजा होते अगर तूने मेरी बात मानी होती। इसलिए भगवान के साथ भी, ये अगर/तो कथन हैं। शाऊल ने भगवान के खिलाफ जाने का फैसला किया और इसलिए भगवान कहते हैं, शाऊल तुम्हारा काम हो गया। मैं अपने दिल के मुताबिक एक व्यक्ति, डेविड के पीछे जा रहा हूँ।

तो यह खुलापन आंदोलन ही है, जॉन सैंडर्स ने कहा कि भगवान भविष्य को नहीं जान सकते क्योंकि भविष्य जानने के लिए नहीं है। यह भगवान भविष्य को नहीं जान सकते क्योंकि ... अब वैसे, क्या यह पवित्रशास्त्र के साथ कुछ समस्याओं में आता है? क्या भगवान भविष्य को जानते हैं? हाँ, वे जानते हैं। तो वहाँ मुझे खुलेपन के लोगों के साथ कुछ बड़ी समस्याएँ हैं, लेकिन मुझे लगता है कि

यह कई भविष्य की बात है और फिर यह संभावना के लिए चीजों को खोलता है। इज़राइल का चुनाव और अस्वीकृति। और यह इसका एक और पहलू है। तो जिस तरह से मैं इसे अब देखता हूँ, और मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह सही है, मुझे वापस आने की ज़रूरत है, यह इस पर मेरा पसंदीदा श्लोक है। यहाँ मैं सोचता हूँ कि भगवान भविष्य को संभावना के रूप में जानना चुनते हैं। वस्तुतः अरबों संभावनाएँ हैं और भगवान भविष्य की सभी संभावनाओं को जानते हैं। उनमें से कुछ चीजें उन्होंने भविष्य में निर्दिष्ट की हैं, यीशु वापस आएंगे। जब यीशु वापस लौटेंगे, तो वे जैतून के पहाड़ पर वापस आएँगे जैसे वे जैतून के पहाड़ से ऊपर गए थे। वे जैतून के पहाड़ पर वापस आएंगे। यहीं पर वह वापस आ रहा है, यीशु वापस आएगा, भगवान ने हमें इस बारे में अपना वचन दिया है। लेकिन यह कैसे होता है, इसके होने के लाखों तरीके हैं। भगवान भविष्य को तथ्य के बजाय संभावना के रूप में जानना चुनते हैं। वैसे, क्या भगवान चुन सकते हैं कि वह किसी चीज़ को कैसे जानते हैं? क्या भगवान चुन सकते हैं कि वह किसी चीज़ को कैसे जानते हैं? मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि उन्होंने भविष्य को संभावना के रूप में जानना चुना है और इसलिए हम ऐसे विकल्प चुन सकते हैं जो भविष्य को आकार देने के तरीके को प्रभावित करते हैं।

तो अब, जब मैंने यह कह दिया है, तो मैं बस यह कहना चाहता हूँ। मुझे नहीं पता कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ। और सच तो यह है कि यशायाह अध्याय 40 में लिखा है, भगवान यह कहते हैं। "कोई भी मेरी समझ को नहीं समझता।" "कोई भी मेरी समझ को नहीं समझता।" मुझे लगता है कि यह मेरी सबसे बड़ी समस्या है, क्योंकि मैं जिन लोगों को सुधारवादी देखता हूँ, उनमें से बहुत से लोग ऐसे हैं। जब आप सुधारवादी लोगों से बात करते हैं, तो ऐसा लगता है कि उन्हें लगता है कि वे जानते हैं। उन्हें लगता है कि वे जानते हैं कि भगवान ऐसे ही हैं। भगवान लोगों को चुनते हैं। भगवान लोगों को न्यायोचित ठहराते हैं और उन्हें लगता है कि उन्हें सब कुछ समझ में आ गया है। मैं आपको यह बता रहा हूँ कि नहीं, भगवान कहते हैं, "कोई भी मेरी समझ को नहीं समझता।" तो एक निश्चित बिंदु पर आपको पीछे हटना होगा और कहना होगा... तो जॉन पाइपर चीजों को इस तरह समझते हैं। मैं चीजों को इस तरह समझता हूँ। आप जानते हैं, डॉ. ग्रीन, जिनका मैं वास्तव में सम्मान करता हूँ, वे चीजों को एक अलग तरीके से समझते हैं। मुझे डॉ. ग्रीन को जगह देनी होगी, मुझे जॉन

पाइपर को जगह देनी होगी, भले ही मैं उनसे सहमत न होऊँ। मुझे उम्मीद है कि वे मुझे जगह देंगे। यही समस्या का एक हिस्सा है। यह है कि लोग इन चीज़ों के बारे में इतने हठधर्मी हो जाते हैं कि वे वास्तव में मसीह में अपने भाइयों और बहनों के पीछे पड़ जाते हैं। वैसे, सबसे बड़ा सिद्धांत क्या है? मैं जानता हूँ, मैं यह जानता हूँ, कि यीशु ने हमें एक दूसरे से प्रेम करने के लिए कहा है। अगर कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के पीछे इस तरह से तानाशाही और हठधर्मी तरीके से जा रहा है और मसीह में किसी दूसरे व्यक्ति को नष्ट कर रहा है, तो मुझे वास्तव में उस पर सवाल उठाना चाहिए। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि प्रेम, वैसे, उसका प्रेम एक बहुआयामी चीज़ है। क्या किसी दूसरे व्यक्ति से प्रेम करना कठिन है? क्या किसी दूसरे व्यक्ति से प्रेम करना कठिन है? मैं आपके रूममेट के बारे में बात कर रहा हूँ। क्या किसी दूसरे व्यक्ति से प्रेम करना कठिन है? इसका उत्तर हाँ है। जब आप वास्तव में किसी व्यक्ति के साथ दिन-प्रतिदिन रहना शुरू करते हैं, तो आपको उसकी सभी खामियाँ दिखाई देती हैं। इसलिए किसी दूसरे व्यक्ति से प्रेम करना वास्तव में कठिन है। मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि आप बस .....

तो चलिए फिर से इस बात पर वापस आते हैं। पुस्तक में एक आंदोलन है ... हाँ, साइन इन शीट्स यह एक अच्छा सवाल है। नहीं। दरअसल बेन, जब आप वापस आएँगे तो मैं आपको इन्हें दूसरों को देने दूँगा। यह आदमी बहुत प्रतिभाशाली है। वह न केवल वीडियो बनाता है, बल्कि वह सब कुछ करता है। वास्तव में, मुझे शायद उसे कक्षा में पढ़ाने देना चाहिए। बहुत प्रतिभाशाली आदमी। धन्यवाद बेन। रोमियों की पुस्तक के पहले भाग में, यह बात है कि अन्यजाति पापी हैं, यहूदी पापी हैं, और सभी पापी हैं। फिर मूल रूप से यह ईश्वर की कृपा की ओर बढ़ता है। फिर अध्याय 9 से 11 में जो आपके पास है, मूल रूप से 8 से 11 में यह निर्माण कर रहा है जहाँ ईश्वर इस प्रक्रिया में अपनी भागीदारी दिखा रहा है और मूल रूप से ईश्वर की कृपा के चमत्कार दिखा रहा है। रोमियों के अध्याय 11 श्लोक 33 पर चलते हुए और मुझे लगता है कि यह उस जगह का शिखर है जहाँ यह आगे बढ़ रहा है। यह ईश्वर के मस्तिष्क के कार्य करने के तरीके की सभी पेचीदगियों को समझने की कोशिश करने के लिए एक बड़े संवाद की ओर नहीं बढ़ रहा है। पॉल के लिए यह यहीं तक जाता है। रोमियों 11 के अंत में कहा गया है, "हे ईश्वर की बुद्धि और ज्ञान का धन कितना गहरा है!

उसके निर्णय और उसके मार्ग कितने अथाह हैं। प्रभु के मन को किसने जाना है," जब वह पूछता है, "प्रभु के मन को किसने जाना है?" उस प्रश्न का उत्तर क्या है? "प्रभु के मन को किसने जाना है?" उस प्रश्न का उत्तर, यह एक अलंकारिक प्रश्न है, है न? "प्रभु के मन को कौन जानता है।" उत्तर है कोई नहीं। वह ईश्वर है। "प्रभु के मन को किसने जाना है या कौन उसका सलाहकार रहा है, जिसने कभी ईश्वर को दिया है कि ईश्वर उन्हें बदले में दे, क्योंकि उससे और उसके द्वारा और उसके लिए सभी चीजें हैं।" प्रश्न, क्या दुनिया हमारे बारे में है या मैं इसे और अधिक विशिष्ट रूप से कहूँ। क्या दुनिया मेरे बारे में है? क्या दुनिया मेरे बारे में है? हाँ, बिल्कुल। यह सब मेरे बारे में है। इसका क्या मतलब है? नहीं, नहीं, नहीं। दुनिया, ब्रह्मांड, भगवान के बारे में है और यह एक बदलाव है।

तो लोगों का मुख्य उद्देश्य क्या है? सबसे बड़ा उद्देश्य क्या है? लोगों का अंतिम लक्ष्य क्या है? वेस्टमिंस्टर कन्फेशन में लोगों का मुख्य उद्देश्य, जैसा कि वे कहते हैं, ईश्वर की महिमा करना और हमेशा के लिए उसका आनंद लेना है। यह वास्तव में एक सुंदर कथन है, "ईश्वर की महिमा करना और हमेशा के लिए उसका आनंद लेना"। यही मानव होने का सार है। तो "उससे और उसके द्वारा और उसके लिए सब कुछ है, उसकी महिमा हमेशा के लिए हो। आमीन।" वह यहीं समाप्त होता है। तो यह एक सुंदर स्तुति है। तो शाऊल, पॉल इन सभी चीजों और ईश्वर की इन सभी सलाहों से जूझता है और फिर वह ईश्वर की महिमा के साथ समाप्त होता है, वह स्तुति में समाप्त होता है। मुझे लगता है कि यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण स्थान है। अब कुछ कठिनाइयाँ जो रोमियों को पढ़ते समय आती हैं, रोमियों 9 से 11 को फिर से पढ़ते हुए, चुनाव, कुछ लोग इसे मूल रूप से इस्राएलियों बनाम अन्यजातियों के रूप में देखते हैं। वह 9 से 11 में जो दिखा रहा है वह यह है कि इस्राएली और अन्यजाति मसीह में एक साथ आ रहे हैं। इसलिए बहुत से लोग जैसे ईपी सैंडर्स और अन्य लोग मुझे लगता है कि सही ढंग से देख रहे हैं कि रोमियों की पुस्तक व्यक्तिगत उद्धार के बारे में नहीं है। हम इन अंशों को पढ़ते हैं और उन्हें व्यक्तियों पर लागू करते हैं। सैंडर्स और कुछ अन्य लोग जो कह रहे हैं वह यह है कि नहीं, ये यहूदियों के कॉर्पोरेट समूहों के गैर-यहूदियों के साथ आने के बारे में अधिक हैं। अगर यह व्यक्तिगत उद्धार के बारे में बात नहीं कर रहा है तो जरूरी नहीं कि मैं

भगवान के साथ अपना उद्धार कैसे प्राप्त कर सकता हूँ? तो यह इसे देखने का एक अलग तरीका है।

वैसे, बुराई की समस्या के साथ आप क्या करते हैं। अगर ईश्वर हर चीज़ पर पूरी तरह से संप्रभु है, तो आप बुराई की समस्या के साथ क्या करते हैं। मैं आपको यहाँ खुद से उलझा देता हूँ। अगर, अगर ईश्वर हर चीज़ पर संप्रभु है और कोई और नहीं है, वह सभी निर्णय लेता है, सब कुछ निर्धारित है, तो आप बुराई के बारे में क्या करते हैं? अगर ईश्वर हर चीज़ पर हावी है, तो आप बुराई के साथ क्या करते हैं? क्या ईश्वर ने बुराई बनाई? अगर ईश्वर हर चीज़ पर हावी है और सब कुछ उसके परामर्श के अनुसार काम कर रहा है, तो आप बुराई की समस्या के साथ क्या करते हैं। इसे थियोडिसी कहा जाता है - ईश्वर और धार्मिकता। ईश्वर, जो एक धार्मिक, पवित्र ईश्वर है, दुनिया में बुराई कैसे हो सकती है? ईश्वर ऐसी दुनिया कैसे बना सकता है जिसमें इतना दर्द और पीड़ा है? मेरे कार्यालय में अभी एक छात्र था, हम अभी इस बारे में बात कर रहे थे। ईश्वर ऐसी दुनिया कैसे बना सकता है जो दर्द और पीड़ा से भरी हो? खुद ईश्वर के बारे में क्या? क्या ईश्वर खुद पीड़ित है? वह दुखों की दुनिया बनाता है। क्या ईश्वर खुद पीड़ित है? पुराने नियम के उन अंशों को याद करें, जहाँ कहा गया था कि परमेश्वर को इस बात का दुख है कि उसने पृथ्वी पर मानवजाति को बनाया, कि उसे इस बात का दुख है। यीशु ने क्या किया? यीशु रोया। क्या आप मुझे वह श्लोक बता सकते हैं जहाँ लिखा है, यीशु हँसा। यीशु के हँसने वाले श्लोक कहाँ हैं। मुझे जो श्लोक याद है, उसमें लिखा है, यीशु रोया। और इसलिए मैं आपको यह सुझाव दे रहा हूँ कि परमेश्वर हमारे दर्द में शामिल होता है। मैं लोगों को जो सुझाव देने की कोशिश करता हूँ, उसे परमेश्वर का करुण स्वर कहा जाता है, कि परमेश्वर इस ब्रह्मांड में सबसे अधिक पीड़ित प्राणी है। परमेश्वर ही वह है जिसने इस अच्छे को बनाया और हमें स्वतंत्र विकल्प दिया और हमें विकल्प दिया। परमेश्वर को चुनने के बजाय, लोगों ने क्या कहा, हम परमेश्वर के अलावा कुछ भी चाहते हैं। हम आपको पसंद नहीं करते। परमेश्वर, हम यहाँ से चले गए। परमेश्वर, आपको क्या लगता है कि अस्वीकृति के बारे में कैसा महसूस होता है? क्या आपको कभी किसी ऐसे व्यक्ति ने अस्वीकार किया है जिसे आप प्यार करते हैं? क्या इससे आपको दुख होता है? क्या इससे आपके अस्तित्व की गहराई तक चोट पहुँचती है?

मैं एक ऐसे युवक को जानता हूँ जिसने एक महिला से कहा कि वह शादीशुदा है और उसने कहा कि वह तलाक चाहती है। उसने कहा, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मैं काउंसलिंग के लिए जाऊँगा, मैं जो भी करना होगा करूँगा। बस मुझे बताओ कि मुझे क्या करना है। मैं करूँगा। मैं तुमसे प्यार करता हूँ।" वह उसकी ओर मुड़ी और बोली, "हमारी शादी को छह साल हो गए हैं।" उसने कहा, "मुझे नहीं पता कि मैंने कभी तुमसे प्यार किया था या नहीं।" उस बच्चे पर इसका क्या असर हुआ? इसने उसके दिल को चीर दिया, उसके दिल को चीर दिया। तो मैं जो कह रहा हूँ, क्या आपने कभी इस तरह से प्यार को ठुकराए जाने का अनुभव किया है? यह बहुत दुख देता है। मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि उसका प्यार बहुत बड़ा, बहुत बड़ा, हमारे प्यार से भी बड़ा है। भगवान ने सहस्राब्दियों से उस अस्वीकृति को महसूस किया है। तो भगवान का प्यार था। क्या भगवान के प्यार से बेहतर कुछ भी है? आप जानते हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ? यह सबसे अच्छा है और फिर हमें करने की आज्ञा दी जाती है। यीशु ने हमसे क्या प्यार किया? आप कैसे जानते हैं कि यीशु ने हमसे प्यार किया? यीशु ने उनसे प्यार किया क्योंकि उसने बलिदान दिया। आप कैसे बता सकते हैं कि कोई आपसे प्यार करता है या नहीं? आप कैसे बता सकते हैं? आप यह जान सकते हैं कि वे आपके लिए कितना त्याग करने को तैयार हैं। क्या आप में से कुछ लोग जानते हैं कि आपके माता-पिता आपसे प्यार करते हैं क्योंकि आपके माता-पिता ने आपके लिए त्याग किया है और आपने उनके त्याग को आपके लिए देखा है? आप जानते हैं कि वे आपसे प्यार करते हैं। जब आपके पास कोई ऐसा व्यक्ति होता है जो सिर्फ़ आपका इस्तेमाल करना चाहता है, तो वह आपको अपने लिए इस्तेमाल करना चाहता है। वह प्यार या वासना है जो उपभोग करने वाली चीज़ है। बहुत सारा प्यार आत्म बलिदान से जुड़ा होता है तो यह बुराई की समस्या है। भगवान एक अच्छा भगवान कैसे हो सकता है और फिर भी एक ऐसी दुनिया हो सकती है जो अपनी बुराई के साथ बनाई गई है?

फिर प्रार्थना की समस्या है। यदि ईश्वर वही करने जा रहा है जो ईश्वर करने जा रहा है और सब कुछ पूर्वनिर्धारित है, तो आपको प्रार्थना क्यों करनी चाहिए? आपको प्रार्थना क्यों करनी चाहिए? कुछ लोग कहते हैं कि आप प्रार्थना करते हैं क्योंकि आपको प्रार्थना करने का आदेश दिया गया है। ईश्वर ने आपको प्रार्थना करने का आदेश दिया है। आप कहते हैं, "ठीक है, हम अब प्रार्थना करेंगे क्योंकि

मुझे प्रार्थना करने का आदेश दिया गया है।" वास्तव में, जब आप पवित्रशास्त्र में लोगों को देखते हैं, तो क्या वे प्रार्थना कर रहे हैं क्योंकि उन्हें प्रार्थना करने का आदेश दिया गया था या वे प्रार्थना करते हैं क्योंकि वे ईश्वर से कुशती करना चाहते हैं? ईश्वर, कृपया मेरी मदद करें। तो प्रार्थना की समस्या, क्या प्रार्थना वास्तव में चीजों को बदलती है? क्या प्रार्थना चीजों को बदलती है? क्या आपको पुराने नियम में याद है कि मैंने आपको वह स्थान दिखाया था जहाँ मूसा ने प्रार्थना की थी और ईश्वर ने स्थिति को बदल दिया था। इसलिए जब मैं कहता हूँ कि उसकी प्रार्थना चीजों को बदल देती है, तो प्रार्थना शक्तिशाली होती है। प्रार्थना तब शक्तिशाली होती है जब हम ब्रह्मांड के ईश्वर को संबोधित करते हैं और यह सब तय नहीं होता है। यह सब तय और निर्धारित नहीं होता है। हम ईश्वर से बातचीत कर सकते हैं और ईश्वर सुनता है। ईश्वर सुनता है, जो हमारी प्रार्थनाओं के लिए अविश्वसनीय है। तो प्रार्थना की समस्या, अगर सब कुछ तय है, तो आपको प्रार्थना के साथ एक समस्या है। आपको भगवान के मन बदलने से समस्या है। हमने आपको स्थान दिखाए, संख्या 13 और 14 और निर्गमन 32 जहाँ भगवान नीचे आते हैं, वह हारून और सभी लोगों को नष्ट करने जा रहे हैं क्योंकि वे मूर्तियों की पूजा कर रहे थे और फिर भगवान अपना मन बदल लेते हैं। भगवान कहते हैं, मुझे खेद है कि मैंने उत्पत्ति 6 में पृथ्वी पर मानव जाति बनाई है। तो क्या भगवान अपना मन बदल सकते हैं? और इसका उत्तर यह है कि मैंने आपको जो दिखाने की कोशिश की है वह वास्तव में एक गतिशील भगवान है। भगवान गतिशील हैं और वे बदल सकते हैं। वे सभी प्रकार की चीजें कर सकते हैं। आपके पास मूसा के चुनाव करने की कहानियाँ हैं, भगवान, डेविड चुनाव करते हैं। हमने चुनाव की इस तरह की बहुत सारी कहानियों को पढ़ा। शाऊल के साथ हमने जिन अंशों का उल्लेख किया है। मैं उन पर फिर से चर्चा नहीं करना चाहता, लेकिन वे 1 शमूएल 13 में हैं। वैसे चुनाव की कहानियों में एडम और ईव भी शामिल होंगे।

शास्त्र में बहुत से ऐसे अंश हैं जो कहते हैं कि जो चाहे आ सकता है। जो चाहे आ सकता है। फिर भी, दुनिया से प्यार करना चाहिए कि "जो कोई भी उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि अनंत जीवन पाए।" और इसलिए भगवान का आह्वान व्यापक रूप से फैला हुआ प्रतीत होता है, और जो कोई भी प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करता है, वह बच जाएगा। इसलिए आपको प्रणालियों के बारे



में सावधान रहना होगा। आपको इन धार्मिक प्रणालियों के बारे में सावधान रहना होगा और चाहे आप सुधार शिविर में हों, या आप आर्मिनियन शिविर में हों, या आप खुलेपन के शिविर में हों या आप जिस भी शिविर में हों। मेरा सुझाव है कि आप लोगों के प्रति दयालु होना सीखें और आप ऐसे व्यक्ति को अनुमति दें जो चीजों को सुधार के दृष्टिकोण से देखता है और वे उस परंपरा से हैं, आप उन्हें ऐसा करने की अनुमति देते हैं। जब आप अधिक वेस्लेयन स्थिति से होते हैं, आप और आप प्रेस्बिटेरियन होते हैं, तो आप वेस्लेयन के पास नहीं जाते और कहते हैं, ठीक है, जब आप पवित्रशास्त्र को थोड़ा और गहराई से समझ लेंगे, तो आप मेरे जैसे सुधारित हो जाएंगे क्योंकि हम इसे बहुत अधिक गहराई से समझते हैं। यह वास्तव में एक अहंकारी स्थिति है। मैं जो सुझाव दे रहा हूँ, वह यह है कि आप इस पर अधिक काम करें कि हम वास्तव में ईश्वर के बारे में क्या जानते हैं? हम ईश्वर के बारे में जो जानते हैं, वह शास्त्रों में है। हम ईश्वर के बारे में शास्त्रों से जानते हैं। मैं जो सुझाव दूँगा, वह रहस्य और आश्चर्य है कि हम आश्चर्यचकित हैं। क्या आपने कभी किसी ऐसी चीज़ को देखा है जो वास्तव में बहुत सुंदर है? क्या आपने कभी किसी चिड़ियों को फूल पर जाते देखा है। उनके पास ये फूल होते हैं, आप जानते हैं, होस्टा। चिड़ियाँ ऊपर आकर फूल पर चढ़ जाएंगी और आप बस वहाँ बैठकर कहेंगे, वाह, यह बहुत बढ़िया है। काश मैं इसे वीडियो कैमरे पर कैद कर पाता। या काश मैं समझ पाता कि वहाँ क्या हो रहा है। तो आपके पास रहस्य और आश्चर्य रह जाता है कि यह, यह आकर्षक है। मैं यह कह रहा हूँ कि क्या हम ईश्वर के बारे में मोहित हो जाते हैं? मैं यह कह रहा हूँ कि ईश्वर को धर्मशास्त्रीय रूप से परिभाषित करने की कोशिश करने के बजाय, वह ऐसा है, और ईश्वर ऐसा ही है, कि हम उसे रहस्य और आश्चर्य के साथ देखें। और उस रहस्य और आश्चर्य को हमें आकर्षित करने दें और उस पर हमारा ध्यान केंद्रित करें। यह हमारा ध्यान इसलिए आकर्षित करता है क्योंकि हम ईश्वर की उस उत्कृष्टता और निकटता से बहुत रोमांचित हैं।

अब, ये सिर्फ़ दो धार्मिक अवधारणाएँ हैं। पारलौकिकता का अर्थ है कि ईश्वर पूरी तरह से अलग है, ईश्वर हमसे अलग है। और इसलिए एक अर्थ में ईश्वर दुनिया से अलग है। वह ब्रह्मांड से बड़ा है। मेरा मतलब है, उसने ब्रह्मांड बनाया और इसलिए वह, वह इन्हें बनाता है, वह किसी भी चीज़ से अलग है जिसे हमने कभी जाना है। वह किसी भी चीज़ से अलग है। इसलिए इसे ईश्वर की पारलौकिकता

कहा जाता है कि वह पूरे ब्रह्मांड और हमारे दिमाग से भी परे है। आसन्न आसन्नता का अर्थ है कि ईश्वर बहुत करीब है। वह हमारी सांसों जितना करीब है, ईश्वर हमारे बहुत करीब है। क्या आप में से कुछ लोग ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करते हुए इस परिसर में घूमते हैं? हाँ। ईश्वर हमारे करीब है और इसलिए आपको यह एहसास होता है कि ईश्वर पारलौकिक है। वह समुद्र जितना भव्य और पहाड़ों जितना बड़ा है। लेकिन फिर भी ईश्वर हमारे बहुत करीब है। वह फिर भी क्या है? एक शांत छोटी सी आवाज़। तो इस तरह की अवधारणाएँ, पवित्र अन्य, लेकिन फिर भी वह संबंधपरक है। वह हमसे अलग है, लेकिन फिर भी उसने हमें प्यार करना चुना है और भगवान का प्यार, दुनिया की सबसे अमीर चीज है। मैं पूछता हूँ, मेरे बच्चे बड़े हो रहे हैं। मेरे बच्चे मुझे प्यार करते हैं। हाँ। क्या आपको अपने माता-पिता से कुछ बातें कहना याद है? कि आप वास्तव में नहीं कर सकते, मेरे बच्चों में से एक, और यह कोई बड़ी बात नहीं है, आप कभी नहीं मिलेंगे, मेरी बेटी ने मुझे नरक में जाने के लिए कहा है, दुनिया के किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में कभी मुझे नहीं बताया कि कहां जाना है। जब वह छोटी थी, तो वह ऐसी थी। मेरा मतलब है, मुझे कैसे कहना चाहिए? वह बस फट जाती थी। वह कोई सीमा नहीं जानती थी। जब वह थी, तो वह बस फट जाती थी और, आप जानते हैं, धमाका हो जाता था। मैं उसे समझने की कोशिश करता था और कभी नहीं कर पाया। मैंने उसे समझने और उसके साथ काम करने की कोशिश की। वह हमारे अस्तित्व का वास्तव में कठिन समय था। वास्तव में एक कठिन समय था। मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा। मुझे आशा है कि वह मुझसे प्यार करती है, लेकिन वह, और हम, हम वापस आ गए हैं और हमारे बीच एक रिश्ता है।

तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि ईश्वर संबंधपरक है और ऐसे समय हो सकते हैं जब कोई व्यक्ति आता है और उसे कुछ बहुत बुरे समय का सामना करना पड़ता है। मेरा एक मित्र था जो दर्शनशास्त्र पढ़ाता था। मैं एक बहुत ही रूढ़िवादी स्कूल में पढ़ाता था और यह व्यक्ति वहाँ दर्शनशास्त्र पढ़ाता था और वह एक अच्छा आस्तिक था, दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने के लिए धार्मिक प्रशिक्षण, सेमिनरी प्रशिक्षण जैसी चीज़ों से गुज़रा। मुझे याद है कि उसका तलाक हो गया था और तलाक में उसकी पत्नी को बच्चा मिल गया। वह अपनी बेटी से बहुत प्यार करता था। जब पत्नी को बेटी मिल गई और उसे कुछ नहीं मिला, तो वह बस, बस ईश्वर पर भड़क गया। वह ईश्वर

पर बहुत क्रोधित था और ऐसा लगा जैसे उसने कहा, भगवान को छोड़ो, भगवान को छोड़ो, मुझे नहीं पता कि हमने 30 मिनट तक कितनी बार बात की। मैं कसम खाता हूँ कि उसने 30 मिनट में 30 बार भगवान को छोड़ दिया। अब, वैसे, क्या इसका मतलब यह था कि वह अपने जीवन के उस मोड़ पर ईश्वर को त्याग रहा था? हाँ, मैं ईश्वर को नहीं देखना चाहता। ईश्वर ने मेरा पूरा जीवन बर्बाद कर दिया। देखिए क्या हुआ। मैंने एक बच्चा खो दिया। इस बदबूदार दुनिया में मुझे जिस चीज़ से प्यार था, वह थी वह बच्चा और अब मेरी पत्नी के पास वह बच्चा है। वह मुझे बहुत सीमित शर्तों के अलावा उससे मिलने नहीं देती। तो वह भगवान से पूरी तरह नाराज़ था। वैसे, आप किसी को यह उपदेश दे सकते हैं कि आपको इस तरह बात नहीं करनी चाहिए। लेकिन क्या यह संभव है कि वह अपना गुस्सा जाहिर कर रहा था? क्या यह संभव है 10

सालों बाद मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि वह प्रभु के पास वापस आ सकता है। आप नहीं जानते। आप बस नहीं जानते। तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि हम ईसाइयों के रूप में, मुझे लगता है कि हमें सुनने की ज़रूरत है। हमें लोगों की बात सुनने की ज़रूरत है। जब लोग क्रोध दिखा रहे हों तो उन्हें जाने दें, प्रेम वही करता है जो यीशु कहते हैं। क्या? आप उन लोगों के साथ क्या करते हैं जो रोते हैं? आप उनके साथ रोते हैं और जो रो रहे हैं उनके साथ खुश होते हैं, क्या यह सही है? मैंने सोचा कि, "आप खुश होते हैं और सौ लोग आपके साथ खुश होते हैं। आप अकेले रोते हैं और वहाँ कोई नहीं होता।" क्या ऐसा नहीं होता? आप रोते हैं और वहाँ कोई नहीं होता। आप खुश होते हैं और वहाँ आपके सभी तरह के दोस्त होते हैं। तो, ईश्वर संबंधपरक है। वह जो सुझाव दे रहा है वह यह है कि हम ईसाइयों के रूप में, अगर हम दूसरे लोगों से प्यार करने जा रहे हैं, तो हमें संबंधपरक होने की ज़रूरत है। जैसे ईश्वर है। ईश्वर हमारी सुनता है, ईश्वर हमारी सुनता है, ईश्वर हमारी सुनता है, ईश्वर हमारी सुनता है। आप में से कुछ लोग अभी उदास हो सकते हैं। आप अंतिम परीक्षाएँ देने वाले हैं, और आप उदास और निराश हो सकते हैं। आप वास्तव में निराश हो सकते हैं। मैं जो कह रहा हूँ, मैं कैसे कहूँ कि ईसाई जीवन जीवित है? मुझे लगता है कि ईसाई जीवन स्थिर अवस्था में नहीं है। ईसाई जीवन ही जीवन है। कभी-कभी यह 1 मिलियन डॉलर की तरह होता है। कभी-कभी आप वास्तव में निराश हो जाते हैं। मैं जो कह रहा हूँ, ईसाई जीवन ऐसा ही होता है। ईसाई धर्म जीवित है।

और ईश्वर के साथ आपका रिश्ता जीवित है। अन्य लोगों के साथ आपका रिश्ता भी जीवित है। कभी-कभी दूसरे लोग आपको बुरी तरह से चोट पहुँचाते हैं। कभी-कभी आपको लगेगा कि ईश्वर ने भी आपको धोखा दिया है। कभी-कभी आपको लगेगा कि ईश्वर ने भी आपको चित्रित किया है। मैं जो कह रहा हूँ, वह किसी और से प्यार करने का हिस्सा है।

बक्से तोड़ने पर विधर्मी शिकार के बारे में सावधान रहें। कुछ लोगों का धर्मशास्त्र इतना सख्त होता है कि उन्हें लगता है कि वे ही सही हैं। वे दूसरे लोगों के पीछे पड़ जाते हैं। मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह विधर्मी शिकार के बारे में सावधान रहना है। प्यार करना सीखो, प्यार करना सीखो। वैसे, प्यार का मतलब यह नहीं है कि मेरी बेटी मुझ पर इस तरह से भड़क जाती है। क्या इसका मतलब है कि उसे अनुशासित किया गया? जवाब है हाँ। उसे अनुशासित किया गया। इसका एक हिस्सा उसके अपने भले के लिए था। तो मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि विधर्मी शिकार के बारे में सावधान रहें। प्यार करना सीखें। प्यार करना सीखने का मतलब यह नहीं है कि आप स्वीकार करें कि वे जो कह रहे हैं वह गलत है, लेकिन आप वही करें जो आप कर सकते हैं। मैं मूल रूप से अहंकार से दूर काम कर रहा हूँ। किसी को अहंकार की स्थिति से विनम्रता की स्थिति में काम करना चाहिए। मुझे लगता है कि यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण बात है कि आप किसी दूसरे व्यक्ति के पास जाएँ और आप उनकी बात सुनने और उन्हें समझने और मसीह में उनसे प्यार करने की कोशिश करें। तो ये सभी बातें रोमियों में हैं और वास्तव में अच्छे सवाल उठाए हैं। ईश्वर की संप्रभुता का महत्व। यह दुनिया की सबसे बड़ी चीजों में से एक है। आखिर में कौन जीतता है और कुछ लोग, जब आप यह कहते हैं तो परेशान हो जाते हैं, लेकिन आखिर में कौन जीतता है? हम अमेरिका में हैं। हम अब जीतने के बारे में बात नहीं करते। लेकिन, मुझे खेद है, लेकिन अंत में कौन जीतता है क्योंकि बाइबल हमें बताती है कि अंत में भगवान जीतता है। बुराई जीत नहीं पाती। दुख और दर्द, उनका क्या होता है? यह क्या कहता है? अंत में, रहस्योद्घाटन की पुस्तक में, यह कहता है, वह सभी आँसू पोंछ देता है। वैसे, जब वह सभी समय के अंत में रहस्योद्घाटन की पुस्तक में है और वह कहता है कि वह सभी आँसू पोंछ देता है। क्या इसका मतलब यह है कि स्वर्ग में आँसू हैं जिन्हें पोंछा जाना है? हाँ। तो वास्तव में एरिक क्लैप्टन सही थे। स्वर्ग में आँसू हैं। नहीं, गंभीरता से, स्वर्ग में आँसू हैं और मसीह कहते हैं कि

किसी दिन उन्हें मिटा दिया जाएगा। इससे हमें उम्मीद मिलती है। इसलिए रोमियों की पुस्तक में ये बातें हमें उम्मीद और विकल्प देती हैं।

अब, मसीही जीवन, आइए इन बातों पर जल्दी से चर्चा करें। रोमियों 12 में आत्म-बलिदान एक सुंदर अंश है। मुझे नहीं पता कि मैंने आप लोगों को इसे याद करवाया है या नहीं, लेकिन यह याद रखने योग्य है। "इसलिए, मैं तुमसे परमेश्वर की दया के कारण आग्रह करता हूँ कि तुम अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले बलिदान के रूप में अर्पित करो। यही तुम्हारी सच्ची और उचित उपासना है। और इस संसार के स्वरूप के अनुसार न चलो, परन्तु अपने मन के नए हो जाने से अपने आपको बदलते जाओ। तब तुम परमेश्वर की इच्छा को परखकर जान सकोगे कि क्या है। उसकी भली, प्रसन्न और सिद्ध इच्छा।" तो यह मन के परिवर्तन के बारे में बात करता है। उम्मीद है कि गॉर्डन कॉलेज में ऐसा ही होता है। यह रोमियों 12:9 एक और ऐसा है जो मुझे पसंद है। यह कहता है, "प्रेम सच्चा होना चाहिए" और मैं इसे उलटने जा रहा हूँ। यह कहता है, "जो अच्छा है उससे चिपके रहो।" हमारे समाज में जो अच्छा है उससे चिपके रहो। कभी-कभी हम लोगों के सामने हमेशा बुरी चीजें रखना पसंद करते हैं और उन्हें बुराई से जूझने के लिए मजबूर करते हैं। इसमें कहा गया है, जो अच्छा है उससे चिपके रहो और इसमें कहा गया है, "जो बुरा है उससे घृणा करो।" मुझे लगता है, अगर मैं यहाँ अपने समुदाय की आलोचना करूँ, तो हम जो अच्छा है उससे चिपके रहने में अच्छे हैं, लेकिन बुराई से घृणा, मुझे वह बहुत ज़्यादा नहीं दिखती। घृणा बुराई से है। मुझे लगता है कि यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण बात है। बुराई से घृणा करना। मुझे लगता है कि ईसाई कुछ हद तक बहुत अच्छे हो सकते हैं, बुराई को अच्छाई से जीत सकते हैं। आप बुराई का जवाब कैसे देते हैं? आप बुराई का जवाब कैसे देते हैं? इसमें कहा गया है, "बुराई से मत हारो। बुराई से मत हारो, बल्कि अच्छाई से बुराई को जीतो।" मुझे लगता है कि यह एक सुंदर बात है। आप बुराई से कैसे लड़ते हैं? आप अच्छाई करके बुराई से लड़ते हैं। तो यह वास्तव में उन चीजों में से एक है जो मुझे वास्तव में प्रेरित करती है। मैं उठता हूँ और सोचता हूँ, मैं एक व्यक्ति के रूप में एक दिन में सबसे ज़्यादा अच्छा कैसे कर सकता हूँ? और मैं क्या कर सकता हूँ? बुराई, क्या मैं

बाहर जाकर बुराई से लड़ूं या मैं बाहर जाकर अच्छाई करने की कोशिश करूं और अच्छाई को बुराई पर विजय दिलाऊं? तो ये महत्वपूर्ण बातें हैं।

अब, रोमियों 13, एक महत्वपूर्ण मार्ग और सरकार है, और यह महत्वपूर्ण है। मैं सरकार और सरकारी विकल्पों पर इस मार्ग को यहाँ पढ़ना चाहता हूँ। सरकार के बारे में यह आयत कहती है, "हर व्यक्ति को शासकीय अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए। क्योंकि कोई भी अधिकार ऐसा नहीं है जिसे परमेश्वर ने स्थापित किया हो। अधिकारी मौजूद हैं, परमेश्वर द्वारा स्थापित किए गए हैं। इसलिए, जो अधिकार के विरुद्ध विद्रोह करता है, वह परमेश्वर द्वारा स्थापित किए गए अधिकार के विरुद्ध विद्रोह करता है। और जो ऐसा करते हैं, वे अपने ऊपर न्याय लाएँगे। क्योंकि शासक उन लोगों से नहीं डरते जो सही काम करते हैं, बल्कि उन लोगों से डरते हैं जो गलत काम करते हैं।" तो यह वास्तव में कह रहा है कि हमें सरकारी अधिकारियों के अधीन रहने की आवश्यकता है। क्या हमें सरकारी अधिकारी पसंद हैं? यहाँ लिखा है, शासक उन लोगों से नहीं डरते जो सही काम करते हैं, ठीक है। आप में से किसी का पीछा पुलिस की गाड़ी करती है और आपको डर लगता है, फिर आप कहते हैं, क्या पुलिसकर्मी वास्तव में मुझे सही काम करने के लिए बचाने के लिए हैं? या क्योंकि उन्हें लगता है कि मैं ग्रेपवाइन रोड पर दौड़ रहा एक कॉलेज का छात्र हूँ। वे मुझे टिकट देने जा रहे हैं। लेकिन ध्यान दें कि बाइबल शासकीय अधिकारियों के बारे में उच्च दृष्टिकोण रखती है। उन्हें परमेश्वर द्वारा अधिकार में रखा गया है। इसलिए सरकार के प्रति समर्पण होता है। वैसे, बहुत ही रोचक परिणाम, क्या प्रारंभिक चर्च सरकार के प्रति समर्पित था? क्या सरकार ने प्रारंभिक चर्च को सताया था? बहुत से प्रारंभिक ईसाई मारे गए। 12 प्रेरितों, यहूदा को छोड़कर सभी 12 ने खुद को फांसी लगा ली, लेकिन प्रेरितों को विभिन्न तरीकों से मार दिया गया। इसलिए सरकार के प्रति समर्पित हो जाओ।

अध्याय 14 में मसीह में भाई-बहनों का न्याय करने के बारे में बात की गई है। एक व्यक्ति का विश्वास उसे सब कुछ खाने की अनुमति देता है। यह शाकाहारी होने के बारे में बात कर रहा है। मुस्कुराहट के लिए जोश का धन्यवाद, मुझे बस चिंता है कि लोग मुझे गंभीरता से लेते हैं। एक

व्यक्ति का विश्वास उसे सब कुछ खाने की अनुमति देता है और दूसरे व्यक्ति का विश्वास कमजोर है जो केवल सब्जियाँ खाता है। जो व्यक्ति सब कुछ खाता है, उसे उसे नीचा नहीं समझना चाहिए। ऐसा कौन करता है? "जो व्यक्ति सब कुछ नहीं खाता है, उसे खाने वाले व्यक्ति की निंदा नहीं करनी चाहिए। एक व्यक्ति एक दिन को दूसरे दिन से अधिक पवित्र मानता है, दूसरा हर दिन को समान मानता है।" वह कह रहा है कि आपको इस कमजोर भाई के बारे में सावधान रहना होगा। इसलिए जो मैं करता हूँ, उससे मेरा भाई या बहन पाप करता है, तो मैं वह करना बंद कर दूँगा जो मैं करता हूँ। भले ही मुझे मांस खाने का अधिकार है और मैं जानता हूँ कि मैं इसे मूर्तियों को नहीं चढ़ाऊँगा। मैं इसे नहीं खाता क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह मेरे भाई और बहन के लिए अपमानजनक है। और इसलिए यह कमजोर भाई या बहन के बारे में बात कर रहा है। यह कह रहा है कि हाँ, आपको हर तरह की चीज़ें करने की आज़ादी है, लेकिन आप उस आज़ादी को सीमित कर देते हैं क्योंकि आप दूसरे व्यक्ति के बारे में चिंतित हैं। आप उन्हें गुमराह नहीं करना चाहते। इसलिए इसे ईसाई स्वतंत्रता मार्ग और कमजोर भाई कहा जाता है। इसलिए, क्या आप लोग सब्बाथ मनाते हैं? क्या आप में से कुछ लोग सब्बाथ मनाने के तरीके पर वाकई सख्त हैं? मुझे पता है कि यहाँ कुछ संकाय सदस्य हैं जो बहुत सब्बाथवादी हैं। दूसरे लोग, जैसे मैं, और वास्तव में मेरी पत्नी, वह एक CPA है। वह पिछले रविवार को काम पर चली गई। वह पूरे पागल दिन काम पर चली गई। अब क्या हमें यह पसंद है? हमें यह पसंद नहीं है, लेकिन यह उसका व्यवसाय है। मेरी बेटी एक नर्स प्रैक्टिशनर है। एक नर्स प्रैक्टिशनर है। आपको रविवार को अस्पताल में काम करना होगा। "नहीं, नहीं," वह सभी लोगों से कहता है, "रविवार को बीमार मत पड़ो।" मेरा मतलब है, अगर आप एक नर्स हैं, तो आपको रविवार को काम करना होगा क्योंकि लोग रविवार को बीमार पड़ते हैं, यह निर्भर करता है। इसलिए, ऐसी कुछ बातों पर अन्य लोगों के बारे में निर्णयात्मक मत बनिए जिनका कोई महत्व नहीं है।

तो यह रोमियों की पुस्तक है। आप लोग इस सप्ताह कुरिन्थियों पर काम करेंगे, और जब हम वापस आएंगे, तो हम 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर काम शुरू करेंगे। धन्यवाद। यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांड हैं जो न्यू टेस्टामेंट पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र संख्या 24 है। रोमियों का दूसरा भाग..